ग़ालिब की शायरी

प्रकाशक :

स्टॉर पब्लिकेशन्स

२७१५, दरियागंज, दिल्ली-६

मूल्य एक रुपया

वितरक :

पंजाबीपुस्तकभण्डार

दरीबा कलाँ, दिल्ली-६

और आदमी नक़ीब[१] हो बोले है बार-बार
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार
हुक़्क़ा, सुराही, जूतियां दौड़ें बग़ल में मार
कांधे पे रख के पालकी हैं दौड़ते कहार
और उसमें जो पड़ा है सो है वह भी आदमी

बैठे हैं आदमी ही दुकानें लगा-लगा
और आदमी ही फिरते हैं रख सर पें क्वांचा
कहता है कोई 'लो', कोई कहता है "ला, रे ला"
किस-किस तरह की बेचें हैं चीज़ें बना-बना
और मोल ले रहा है सो है वह भी आदमी

तबले, मजीरे, दायरे, सारंगियां बजा
गाते हैं आदमी ही हर इक तरह जा-ब-जा[२]
रंडी भी आदमी ही नचाते हैं गत लगा
और आदमी ही नाचें हैं और देख फिर मज़ा
जो नाच देखता है सो है वह भी आदमी

यां आदमी ही लालो-जवाहर हैं बे-बहा[३]
और आदमी ही ख़ाक से बदतर है हो गया
काला भी आदमी है कि उल्टा है ज्यूं तवा
गोरा भी आदमी है कि टुकड़ा है चांद का
बदशक्ल बदनुमा है सो है वह भी आदमी

---

१. 'हटो बचो' करने वाले प्यादे २. हर जगह ३. अमूल्य

इक आदमी हैं जिनके ये कुछ ज़र्क़-बर्क़[१] हैं
रूपे के जिनके पांव हैं सोने के फ़र्क़[२] है
झमके तमाम ग़र्ब[३] से ले ता-ब-शर्क़[४] हैं
कमख़्वाब, ताश, शाल दुशालों में ग़र्क़[५] हैं
और चीथड़ों लगा है सो है वह भी आदमी

हैरां हूं यारो देखो तो यह क्या सुआंग[६] है
यां आदमी ही चोर है और आप ही थांग[७] है
है छीना झपटी और कहीं बांग तांग है
देखा तो आदमी ही यहां मिस्ले-रांग है
फ़ौलाद से गढ़ा है सो है वह भी आदमी

मरने में आदमी ही कफ़न करते हैं तयार
नहला-धुला उठाते हैं कांधे पे कर सवार
कलमा भी पढ़ते जाते हैं रोते हैं ज़ार-ज़ार
सब आदमी ही करते हैं मुरदे के कारोबार
और वह जो मर गया है सो वह आदमी

शराफ़[८] और कमीने में ले शाह ता-वज़ीर[९]
आदमी ही करते हैं सब कारे-दिल-पिज़ीर[१०]
दमी मुरीद है और आदमी ही पीर
अच्छा भी आदमी ही कहाता है ऐ 'नज़ीर
और सब में जो बुरा है सो है वह भी आदमी

● ● ●

१. भड़कदार (कपड़े) २. माथे ३. पश्चिम ४. पूर्व तक ५. डूबे ६. स्वाँग ७. चोरों को पता देने वाले ८. शरीफ़ों ९. मन्त्री तक

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियाँ
फूली नहीं बदन में समाती हैं रोटियाँ
आँखें परी-रुखों[1] से लड़ाती हैं रोटियाँ
सोने उपर भी हाथ चलाती हैं रोटियाँ
जितने मज़े हैं सब ये दिखाती हैं रोटियाँ

रोटी से जिसका नाक तलक पेट है भरा
करता फिरे है क्या वो उछल कूद जा-ब-जा[2]
दीवार फांदकर कोई कोठा उछल गया
ठट्ठा, हंसी, शराब, सनक, साक़ी, उस सिवा
सौ-सौ तरह की धूमें मचाती हैं रोटियां

पूछा किसी ने यह किसी कामिल[3] फ़क़ीर से
यह मेह्रो-माह[4] हक़[5] ने बनाये है काहे से
वह सुन के बोला, "बाबा, ख़ुदा तुझको ख़ैर दे
हम तो न चाँद समझें न सूरज हैं जानते
बाबा हमें तो यह नज़र आती हैं रोटियाँ

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो
मेले की सैर, ख़्वाहिशे-बाग़ो-चमन न हो
भूखे ग़रीब दिल की ख़ुदा से लगन न हो
सच है कहा किसी ने कि, "भूखे भजन न हो
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियां

---

१. सुन्दरियों २. हर जगह ३. पूर्ण ४. सूर्य-चन्द्रमा ५. ईश्वर

रोटी से नाचे प्यादा क़वायद दिखा-दिखा
असवार नाजे घोड़े को कावा[1] लगा लगा
घुंघरू को बांधे पैक[2] भी फिरता है नाचता
और इसके सिवा ग़ौर से देखो तो जा-ब-जा
सौ सौ तरह के नाच दिखाती है रोटियाँ

रोटी के नाच तो हैं सभी ख़ल्क़[3] में पडे
कुछ भाँड भगैते ये नहीं फिरते नाचते
यह रंडियाँ जो नाचे हैं घूंघट को मुंह पे ले
घूंघट न जानो दोस्तो तुम ज़ीनहार[4] उसे
इस परदे में ये अपने कमाती हैं रोटियां

दुनिया में अब बनी न कहीं और निकोई[5] है
या दुश्मनी व दोस्ती या तुन्द-खूई[6] है
कोई किसी का और किसी का न कोइ है
सब कोई है उसी का कि जिस हाथ डोई है
नौकर, नफ़र गुलाम बनाती हैं रोटियाँ

रोटी का अब अज़ल[8] से हमारा तो है ख़मीर
रूखी ही रोटी हक़ में हमारे है शहदो-शीर[9]
या पतली होवे मोटी, खमीरी हो या क़तीर[10]
गेहूँ, जुआर, बाजरे की जैसी हो नज़ीर
हमको तो सब तरह की खुश आती हैं रोटियाँ

---

१. एड़ २. हरकारा ३. दुनिया ४. हर्गिज ५. नेकी ६. क्रोधी स्वभाव ७. नौकर ८. आदि दिवस ९. दूध और शहद १०. मामूली आटे की

जब आदमी के हाल पे आती है मुफ़लिसी[1]
किस-किस तरह से उसको सताती है मुफ़लिसी
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफ़लिसी
भूखा तमाम रात सुलाती है मुफ़लिसी
यह दुख वो जाने जिस पे कि आती है मुफ़लिसी

जो अहले-फ़ज़्ल[2] आलिमो-फाज़िल कहाते हैं
मुफ़लिस हुए तो कलमा तलक भूल जाते हैं
पूछे कोई 'अलिफ़' तो उसे 'बे' बताते हैं
वह जो ग़रीब-गुरुबा के लड़के पढ़ाते हैं
उनकी तो उम्र भर नहीं जाती है मुफ़लिसी

जब रोटियों के बँटने का आकर पड़े शुमार
मुफ़लिस को देवें एक तवंगर[3] को चार-चार
गर और मांगे वह तो उसे झिड़के बार-बार
इस मुफ़लिसी का आह बयां क्या करूं मैं यार
मुफ़लिस को इस जगह भी चबाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस की कुछ नज़र नहीं रहती है आन पर
देता है अपनी जान वो एक-एक नान[4] पर
हर आन टूट पड़ता है रोटी के ख़्वान[5] पर
जिस तरह कुत्ते लड़ते हैं इक उस्तख़्वान[6] पर
वैसा ही मुफ़लिसों को लड़ाती है मुफ़लिसी

---

१. ग़रीबी २. विद्वान ३. मालदार ४. रोटी ५. थाल
६. हड्डी

लाज़िम है गर ग़मी में कोई शोरग़ुल मचाय
मुफ़लिस बग़ैर ग़म के ही करता है हाय-हाय
मर जाय गर कोई तो कहा से उसे उठाय
इस मुफलिसी की ख़्वारियाँ क्या-क्या कहूँ मै हाय
मुर्दे को बेकफ़न के गड़ाती है मुफ़लिसी

क्या-क्या मैं मुफ़लिसी की कहूं ख़्वारी फकड़ियाँ
झाड़ू बग़ैर घर में बिखरती हैं झकड़ियां
कोने में जाले लिपटे हैं, छप्पर में मकड़ियां
पैदा न होवें जिसके जलाने को लकड़ियां
दरिया में उनके मुर्दे बहाती है मुफ़लिसी

बीवी की नथ न लड़के के हाथों कड़े रहे
कपड़े मियां के बनिये के घर में पड़े रहे
जब कड़ियां बिक गईं तो खंडहर में पड़े रहे
जंजीर नै[1] किवाड़ न पत्थर गड़े रहै
आख़िर को ईंट-ईंट खुदाती है मुफ़लिसी

नक़्क़ाश[2] पर भी ज़ोर जब आ मुफ़लिसी करे
सब रंग दम में करदे मुसव्वर[3] के किरकिरे
सूरत ही उसकी देख के मुंह खिच रहे परे
तसवीर और नक़्श[4] में वह रंग क्या भरे
उसके तो मुंह का रंग उड़ाती है मुफ़लिसी

---

१. न २. चित्रकार ३. चित्रकार ४. रेखाओं

जब मुफलिसी से होवे कलावंत का दिल उदास
फिरता ले तंबूरे को हर घर के आस-पास
इक पाव सेर आटे को दिल में लगा के आस
गौरी का वक़्त होवे तो गाता है वह विभास
यां तक हवास उसके उड़ाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस जो ब्याह बेटी का करता है बोल-बोल
पैसा कहां जो जाके वो लावे जहेज़ मोल
जोरू का वह गला है कि फूटा हो जैसे ढोल
घर की हलालखोरी[1] तलक करती है ठिठोल
हैबत[2] तमाम उसकी उठाती है मुफ़लिसी

बेटे का ब्याह हो तो न भाई न साथी है
नै रौशनी न बाजे की आवाज़ आती है
मां पीछे एक मैली चदर ओढ़े जाती है
बेटा बना है दूल्हा तो बाबा बराती है
मुफ़लिस की यह बरात चढ़ाती हैं मुफ़लिसी

दरवाज़े पर ज़नाने बजाते हैं तालियाँ
और घर में बैठी डोमनी देती हैं गालियां
मालिन गले की हार हो दौड़ी ले डालियां
सक़्क़ा खड़ा सुनाता है बातें रिज़ालियां[3]
यह ख़्वारी यह ख़राबी दिखाती है मुफ़लिसी

---

१. भंगिन २. डर ३. बेहूदा

कोई "शूम, बेहया" कोई बोला "निघट्टू है"
बेटी ने जाना बाप तो मेरा निखट्टू है
बेटे पुकारते हैं कि "बाबा निखट्टू है"
बीबी ये दिल में कहती है "अच्छा निखट्टू है"
आख़िर निखट्टू नाम धराती है मुफ़लिसी

चूल्हा तवा न पानी के मटके में आबी[1] है
पीने को कुछ, न खाने को और न रकाबी है
मुफ़लिस के साथ सब के तईं बेहिजाबी[2] है
मुफ़लिस की जोरू सच है कि हां सबकी भाभी है
इज़्जत सब उसके दिल की गंवाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस किसी का लड़का जो ले प्यार से उठा
बाप उसका देखे हाथ का और पाँव का कड़ा
कहता है कोई "जूती न लेवे कहीं चुरा"
नटखट, उचक्का, चोर, दग़ाबाज़, गठकटा
सौ-सौ तरह के ऐब लगाती है मुफ़लिसी

दुनिया में लेके शाह से ऐ यारो ता-फ़क़ीर[3]
खालिक़[4] न मुफ़लिसी में किसी को करे असीर[5]
अशराफ़[6] को बताती है इक आन में हक़ीर[7]
क्या-क्या मैं मुफ़लिसी की ख़राबी कहूँ 'नज़ीर'
वह जाने जिसके दिल को जलाती है मुफ़लिसी

● ● ●

१. आब (पानी) ही २. खुलापन ३. फ़क़ीर तक ४. ईश्वर
५. कैदी ६. शरीफ़ों ७. क्षुद्र

टुक हिर्सो-हवा[1] को छोड़ मियां, मत देस-बिदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़[2] अजल[3] का लूटे है दिन रात बजाकर नक़्क़ारा
क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतुर[4] क्या गौनें पल्ला सर भारा
क्या गेहूं, चावल, मोठ, मटर, क्या आग, धुआं और अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

गर तू है लक्खी बंजारा और खेप भी तेरी भारी है
ऐ ग़ाफिल तुझसे भी चढ़ता इक और बड़ा व्योपारी है
क्या शक्कर, मिसरी, कंद, गरी क्या साँभर मीठा खारी है
क्या दाख, मुनक़्क़ा, सोंठ, मिरच, क्या केसर, लौंग, सुपारी हैं
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

तू बधिया लादे बैल भरे जो पूरब पश्चिम जावेगा
या सूद बढ़ाकर लावेगा या टोटा घाटा पावेगा
क़ज़्ज़ाक अजल का रस्ते में जब भाला मार गिरावेगा
धन दौलत नाती पोता क्या इक कुनबा काम न आवेगा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

जब चलते चलते रस्ते में यह गौन-तेरी रह जावेगी
इक बधिया तेरी मिट्टी पर फिर घास न चरने पावेगी
यह खेप जो तूने लादी है सब हिस्सों में बंट जाएगी
धी, पूत, जमाई, बेटा, क्या, बंजारिन पास न आवेगी
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

१. लालच २. डाकू ३. मौत ४. ऊँट

यह खेप भरे जो जाता है यह खेप मियाँ मत गिन अपनी
अब कोई घड़ी पल साअत[1] में यह खेप बदन की है कफ़नी
क्या थाल कटोरी चाँदी को क्या पीतल की डिबिया ढकनी
क्या बरतन सोने चाँदी के क्या मिट्टी की हंडिया चपनी
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

यह धूम-धड़क्का साथ साथ लिये क्यों फिरता है जंगल-जंगल
इक तिनका साथ न जावेगा मौक़ूफ़[2] हुआ जब अन्न और जल
घर-बार अटारी चौपारी क्या ख़ासा, नैनसुख और मलमल
क्या चिलमन, परदे, फ़र्श नये क्या लाल पलंग और रंग-महल
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

कुछ काम न आवेगा तेरे यह लालो-ज़मर्रुद[3] सीमो-ज़र[4]
जब पूंजी बाट में बिखरेगी हर आन बनेगी जान ऊपर
नौबत, नक्क़ारे, बान, निशाँ, दौलत हशमत, फ़ौजें, लशकर
क्या मसनद, तकिया, मुल्क मकाँ, क्या चौकी, कुर्सी, तख़्त, छतर
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

क्यों जी पर बोझ उठाता है इन गौनों भारी-भारी के
जब मौत डेरा आन पड़ा फिर दूने हैं व्योपारी के
क्या साज़ जड़ाऊ, ज़र[5] ज़ेवर क्या गोटे थान किनारी के
क्या घोड़े ज़ीन सुनहरी के क्या हाथी लाल अंबारी के
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

१. घड़ी २. बंद ३. लाल और पुखराज ४. चाँदी, सोना
५. सोना

मग़रूर[1] न हो तलवारों पर मत भूल भरोसे ढालों के
सब पत्ता तोड़ के भागेंगे मुँह देख अजल के भालों के
क्या डिब्बे मोती हीरों के क्या ढेर ख़ज़ाने मालों के
क्या बुक़चे ताश[2], मुशज्जर[3] के क्या तख़्ते शाल दुशालों के
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

क्या सख़्त मकां बनवाता है खंभ तेरे तन का है पोला
तू ऊंचे कोट उठाता है वाँ गोर[4] गढ़े ने मुंह खोला
क्या रैनी[5], खंदक़, रंद[6] बड़े, क्या बुर्ज, कंगूरा अनमोला
गढ़, कोट, रहकला, तोप, क़िला, क्या शीशा दारू और गोला
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

हर आन नफ़े और टोटे में क्यों मरता फिरता है बन-बन
टुक ग़ाफ़िल दिल में सोच ज़रा है साथ लगा तेरे दुश्मन
क्या लोंडी, बांदी, दाई, दिदा[7] क्या बन्दा, चेला नेक-चलन
क्या मसजिद, मंदिर, ताल, कुंआँ क्या खेतीबाड़ी, फूल, चमन
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

जब मर्ग[8] फिराकर चाबुक को यह बैल बदन का हांकेगा
कोई ताज समेटेगा तेरा कोई गौन सिये और टाँकेगा
हो ढेर अकेला जंगल में तू ख़ाक लहद[9] की फाँकेगा
उस जंगल में फिर आह 'नज़ीर' इक तिनका आन न झाँकेगा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

● ● ●

---

१. घमंडी २. एक तरह का छपा हुआ कपड़ा ३. वह कपड़ा जिस पर पेड़ों का डिजाइन हो ४. क़ब्र ५. क़िले की छोटी दीवार ६. दीवार के वह सूराख़ जिसमें से बन्दूकों की मार की जाय ७. बूढ़ी नौकरानी ८. मौत ९. क़ब्र

तनहा[1] न उसे अपने दिले-तंग में पहचान
हर बाग़ में, हर दश्त[2] में हर संग[3] में पहचान
बे-रंग में, बा-रंग[4] में, नै-रंग[5] में पहचान
मंज़िल में, मुक़ामात में, फ़रसंग[6] में पहचान
नित रूम[7] में, और हिन्द में और जंग[8] में पहचान
हर राह में हर साथ में हर संग में पहचान
हर अज़्म[9] इरादे में, हर आहग[10] में पहचान
हर धूम में हर सुलह में हर जंग में पहचान
हर आन में, हर बात में, हर ढंग में पहचान
आशिक़ है तो दिलबर को हर इक रंग में पहचान

फल पात कहीं, शाख़ कहीं फूल कहीं बेल
नरगिस कहीं, सौसन कहीं, बेला कहीं राबेल
आज़ाद कोई सब से, किसी का है कही मेल
मलता है कोई राख, चमेली का कोई तेल
करता है कोई, ज़ुल्म को लेता है कोई झेल
बाँधे कहीं तलवार, उठाता है कोई सेल[11]
अदना कोई आला, कोई सूखा, कोई डंडपेल
जब ग़ौर से देखा तो उसी के हैं ये सब खेल
हर आन में, हर बात में, हर ढंग मैं पहचान
आशिक़ हैं तो दिलबर को हर इक रंक में पहचान

---

१. केवल २. जंगल ३. पत्थर ४. रंगीन ५. विभिन्नता
६. लगभग छः मील का एक माप ७. रोम ८. अफ्रीका ९. इरादा
११. आवाज ११. घूँसा

गाता है कोई शौक़ में करता है कोई हाल[१]
छाने है कोई ख़ाक उड़ाता है कोई माल
हंसता है कोई शाद किसी का है बुरा हाल
रोता है कोई होके गमो-दर्द में पामाल[२]
नीचे है कोई शोख़ बजाता है कोई गाल
पहने है कोई चीथड़े ओढ़े है कोई शाल
करता है कोई नाज़ दिखाता है कोई बाल
जब ग़ौर से देखा तो उसी की है ये सब चाल
हर आन में, हर बात मै, हर ढंग में पहचान
आशिक़ है तो दिलवर को हर इक रंग में पहचान

जाता है कोई हरम[३] में कोई क़ुरआन बग़ल मार
कहता है कोई दैर[४] में पोथी के समाचार
पहुँचा है कोई पार भटकता है कोई बार
बैठा है कोई ऐश में फिरता हे कोई ज़ार
आजिज़[५] कोई, बेकस कोई, ज़ालिम कोई लठमार
मुफ़लिस कोई नाचार, तवंगर[६] कोई ज़रदार[७]
ज़ख़्मी कोई, माँदा कोई, अच्छा कोई बदकार
जब ग़ौर से देखा तो उसी के हें सब असरार[८]
हर आन में, हर बात में, हर ढंग में पहचान
आनशिक़ है तो दिलबर को हर इक रंग में पहचान

---

१. सूफ़ियों का मस्ती में नाचना २. पद-दलित ३. काबा
४. मदिर ५. विवश ६. धनी ७. धनी ८. रहस्य

सर्दी कहीं; गर्मी कहीं, जाड़ा कही बरसात
दोज़ख़ कहीं बैकुण्ठ कहीं अर्ज़ों-समावात[१]
हूरें कहीं, ग़िल्माँ कहीं, परियाँ कहीं जिन्नात
ऊजड़ कहीं, बस्ती कहीं, जंगल कहीं देहात
सख़्ती कहीं, राहत कहीं, गर्दिश[२] कहीं सकनात[३]
शादी कहीं, मातम कहीं, नूर और कहीं जुल्मात[४]
तारे कहीं, सूरज कहीं, बुर्ज और कहीं दिन-रात
जब ग़ौर से देखा तो उसी के हैं तिलिस्मात[५]
हर आन में, हर बात में, हर ढंग में पहचान
आशिक़ है तो दिलबर को हर इक रंग में पहचान

क्या हुस्न कहीं पाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या इश्क़ कहीं छाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या रंग में रंगवाया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या नूर ये झमकाया हैं अल्लाह ही अल्लाह
क्या धूप है क्या साया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या मेहर[६] है क्या माया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या ठाठ ये ठहराया है अल्लाह ही अल्लाह
क्या भेद 'नज़ीर' आया है अल्लाह ही अल्लाह
हर आन में, हर बात में, हर ढंग में पहचान
आशिक़ है तो दिलवर को हर इक रंग में पहचान

• • •

---

१. ज़मीन-आस्मान २. घूमना ३. ठहरना ४. अंधेरा ५. जादू
६. कृपा

क्या दिन थे यारो वह भी थे जब कि भोले भाले
निकले थी दाई लेकर फिरती कभी ददा[1] ले
चोटी कोई रखाले बद्धी कोई पिन्हा ले
हंसली गले में डाले, मिन्नत कोई बढ़ा ले
मोटे हों या कि दुबले गोरे हों या कि काले
क्या ऐश लूटते हें मालूम भोले भाले

दिल में किसी के हरगिज़ नै[2] शर्म ने हया है
आगा भी खुल रहा है पीछा भी खुल रहा है
पहने फिरे तो क्या है नंगे फिरे तो क्या है
यां यूं भी वाह-वा है और वूँ भी वाह-वा है
कुछ खा ले इस तरह से कुछ उस तरह से खाले
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

मर जाये कोई तो भी कुछ उनका ग़म न करना
नै जाने कुछ बिगड़ना नै जाने कुछ संवरना
उनको बला से घर में हो क़ैद या कि घिरना
जिस बात पर ये मचले फिर वह ही कर गुज़रना
माँ ओढ़नी को, बाबा पगड़ी को बेच डाले
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

१. बुज़ुर्ग नौकरानी २. न

जो कोई चीज़ देवे नित हाथ ओटते हैं
गुड़, बेर, मूली, गाजर, सब मुँह में घोटते हैं
बाबा की मोंछ, माँ की चोटी खसोटते हैं
गर्दों में अट रहे हैं ख़ाकों में लोटते हैं
कुछ मिल गया सो पीले कुछ बन गया सो खाले
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

जो उनको दो सो खालें फीका हो या सलोना
हैं बादशाह से बेहतर जब मिल गया खिलौना
जिस जा पै[1] नींद आई फिर वाँ ही उनको सोना
परवा न कुछ पलंग की नै चाहिए बिछौना
भोंपू कोई बजाले फिरकी कोई फिरा ले
क्या ऐश लुटते हैं मासूम भोले भाले

यह बालेपन का यारो आक़म अज़ब बना है
यह उम्र वह है इसमें जो है सो बादशा है
और सच अगर्चे पूछो तो बादशा भी क्या है
अब तो 'नज़ीर' मेंरी सबको यही दुआ है
जीतें रहें सभों के आसो-मुराद वाले
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले

● ● ●

१. जगह

कोरे बरतन हैं क्यारी गुलशन की
जिससे खिलती है हर कली तन की
बूँद पानी की उनमें जब खनकी
क्या वो प्यारी सदा[1] है सन-सन की
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

कोरा पनिहारी का जो है मटका
उसका जोबन कुछ और ही मटका
ले गया जान पाँव का खटका
दिल घड़े की तरह से दे पटका
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

कोरे कूज़ों[2] को देख आलम में
कूज़े मिसरी के भर गये ग़म में
यूँ वो रिसते हैं आब[3] के नम[4] में
जैसे डूबे हों फूल शबनम में
ताज़गी जी की और तरी मन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

---

१. आवाज़ २. प्यालों ३. पानी ४. तरी

जिस सुराही में सर्द पानी है
मोती की आब पानी पानी है
ज़िन्दगी की यही निशानी है
दोस्तो यह भी बात मानी है
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

जितने नज़रो-नियाज़[1] करते हैं
और जो पीरों से अपने डरते हैं
जब किला फूल पान धरते हैं
वह भी कोरी ही ठिलियां भरते हैं
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

कोरों पर जो 'नज़ीर' जोबन है
जोजरे[2] में कहाँ वो खनखन है
जिस घड़ौंची पे कोरा बासन है
वह घड़ौंची नहीं है गुलशन है
ताज़गी जी की और तरी तन की
वाह क्या बात कोरे बरतन की

• • •

१. भेंट-पूजा २. पुराना बरतन

क्या ऐश की रखती है सब आहंग[1] जवानी
करती है बहारों के तई दंग जवानी
हर आन पिलाती है मै[2] और भंग जवानी
करती है कहीं सुलह कहीं जंग जवानी
इस ढब के मज़े रखती और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अज़ब रंग जवानी

अल्ला ने जवानी का वो अलम है बनाया
जो हर कहीं आशिक़, कहीं रुसवा, कहीं शैदा[3]
फन्दे में कहीं जो है कहीं दिल है तड़पता
मरते हैं, सिसकते हैं, बिलखते हैं अहा-हा
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

लड़ती है कहीं आँख, कहीं दिष्ट[4], कहीं सैन
झूठा है कहीं प्यार किसी से हैं लगे नैन
वादा कहीं, इक़रार कहीं, सैन कहीं नैन
नै[5] जी को फ़राग़त[6] है न आंखों के तई चैन
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

उलफ़त है कहीं, मेह्रो-मुहब्बत है कहीं चाह
करता है कोई चाह कोई देख रहा राह

---

१. आवाज़ २. शराब ३. आसक्त ४. दृष्टि ५. न ६. छुटकारा

साक़ी है, सुराही है, परीज़ाद हैं हमराह[१]
क्या ऐश हैं, क्या ऐश हैं, क्या ऐश हैं वल्लाह
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

गर रात किसी पास रहे ऐश में ग़लतान[२]
और वां से किसी और के मिलने का हुआ ध्यान
घबरा के उठे जब तो गिरे पांव पे हर आन
कहती है "हमें छोड़ के जाते हो किधर जान ?"
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

रस्ते में निकलते हैं तो होती है ये चाहें
वह शोख़, कि हों बन्द जिन्हें देख के राहें
खांसे है कोई हँसके कोई भरती है आहें
पड़ती हैं हर इक जा[३] से निगाहों पे निगाहें
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

जाते हैं तवाइफ़[४] में तो वां होती है यह चाव
कहती है कोई इनके लिए पान बना लाओ
कोई कहती है "यां बैठो" कोई कहती है 'यां आओ'
नाचे है कोई शोख़ बताती है कोई भाव
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी

---

१. साथ २. लोटते हैं ३. जगह ४. वेश्याओं

हंस-हँस के कोई हुस्न की छलबल है दिखाती
मिस्सी कोई सुरमा कोई काजल है दिखाती
चितवन की लगावट कोई चंचल है दिखाती
कुरती कोई अंगिया कोई काजल है दिखाती
इस ढब के नज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अज़ब रंग जवानी

कहती है कोई, "रात मेरे पास न आये"
कहती है कोई, "हमको भी ख़ातिर में न लाये"
कहती है कोई, "किसने तुम्हें पान खिलाये ?"
कहती है कोई, "घर को जो जाये हमें खाये"
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अज़ब रंग जवानी

क्या तुझसे 'नज़ीर' अब मैं जवानी की कहूँ बात
इस सिन[1] में गुज़रती है अज़ब ऐश से औक़ात
महबूब[2] परीज़ाद चले आते है दिन-रात
सैरें हैं, बहारें हैं, तवाज़े हैं, मुदारात[3]
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी
आशिक़ को दिखाती है अज़ब रंग जवानी

• • •

---

१. अवस्था २. प्रियतम ३. सत्कार

बटमार[1] अजल[2] का आ पहुँचा, टुक इसको देख डरो बाबा।
अब अश्क[3] बहावो आंखों से, और आहें सर्द भरो बाबा,
दिल हाथ उठा इस जीने से, ले बस मनमार मरो बाबा,
जब बाप की ख़ातिर रोते थे, अब अपनी ज़ातिर रो बाबा,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

अब जीने को तुम रुख़सत[4] दो और मरने को महमान करो,
ख़ैरात करो एहसान करो, या पुन्न करो या दान करो,
या पूरी लड्डू बनवाओ, या ख़ासा हलवा दान करो,
कुछ लुत्फ़ नहीं अब जीने का, अब चलने का सामान करो,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

दिल काटो अपना जीने से, अब और गले को मत काटो,
अब चाट फ़ना की[5] टुक[6] चक्खो और ख़ून किसी का मत चाटो,
धुन छोड़ो हिस्से बख़रे की, और भाजी अपनी तुम बाटो,
नाकुन्द बछेरे कूद चुके, अब और दोलत्ती मत छाटो,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।

ये अस्प[7] बहुत कूदा उछला, अब कोड़ा मारो ज़ेर[8] करो,
जब माल इकट्ठा करते थे, अब तन का अपने ढेर करो,

१. लुटेरा २. मौत ३. आंसू ४. बिदाई ५. मौत ६. ज़रा ७. घोड़ा ८. वश में

गढ़ टूटा लश्कर भाग चुका, अब म्यान में तुम शमशीर[1] करो,
तुम साफ़ लड़ाई हार चुके, अब भगने में मत देर करो,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर जीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।
सर काँपा चाँदी बाल हुए, मुँह पीला पलकें आन झुकीं,
क़द टेढ़ा कान हुए बहरे, और आंखें भी चुंधियाय गईं,
सुख नींद गई और भूक घटी, दिल सुस्त हुआ आवाज़ नहीं,
जो होनी थी सो हो गुजरी, अब चलने में कुछ देर नहीं,
मन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।
गर अच्छी करनी नेक अमल[2], तो दुनिया से ले जाओगे,
तो घर अच्छा सा पाओगे, और बैठ के सुख से खाओगे,
और ऐसी दौलत छोड़के तुम, जो खाली हाथों जाओगे,
फिर कुछ भी नहीं बन आवेगा, घबराओगे, पछताओगे,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फिक्र करो बाबा।
ये उम्र जिसे तुम समझे हो, ये हरदम तन को चुनती है,
जिस लकड़ी के बल बैठे हो, दिन-रात ये लकड़ी घुनती है,
तुम गठरी बाँधो कपड़े की, और देख अजल[3] सर धुनती है,
अब मौत कफ़न के कपड़े का, याँ ताना-बाना बुनती है,
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा,
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फिक्र करो बाबा।

●　●　●

१. दुधारी तलवार २. आचरण ३. मौत

ये पैठ अजब है दुनिया की, और क्या-क्या जिन्स[1] इकट्ठी है,
याँ माल किसी का मीठा है, और चीज़ किसी की खट्टी है,
कुछ पकता है कुछ भुनता है, पकवान मिठाई पट्टी है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, ना चूल्हा-भाड़ ना भट्टी है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

कोई ताज खरीदे हँस-हँसकर, कोई तख़्त खड़ा बनवाता है,
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई गुदड़ी ओढ़े जाता है,
कोई भाई बाप चचा नाना, कोई दादा पोता कहाता है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, ना रिश्ता है ना नाता है,
गुल-शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्‌टी है,

कोई सेठ महाजन लाखपती, बज्जाज कोई पनसारी है,
याँ बोझ किसी का हलका है, और खेप किसी की भारी है,
क्या जाने कौन खरीदेगा, और किसने जिन्स उतारी है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, दल्लाल न कोई ब्योपारी है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्‌टी है।

कोई लोटे कूचे गलियों में, तैयार किसी का डेरा है,
कोई बाग-कुआँ बनवाता है, और घेर किसी ने घेरा है,
नित क़ज़िये झगड़े रहते हैं, ये मेरा है ये तेरा है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, ना तेरा है ना मेरा है,

१. पैदावार

गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्टी है।

कहीं धूम मची है कर्ज़ को, कहीं कर्ज़ों का दुःख खेना है,
कोई हीरा पन्ना परखावे, और बेचे कोई चबेना है,
हर रोज़ तकाज़ा धरना है, दुख देना पैसा लेना है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, कुछ लेना है ना देना है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्‌टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्‌टी है।

कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सर को घोट मुंड़ाता है,
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई नंगे मुंगे आता है,
कोई पूजा कथा बखाने हैं, कोई छापा तिलक लगाता है,
जब देखा खूब तो आख़िर को, सब छोड़ अकेला जाता है,
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मिट्‌टी है,
हम देख चुके इस दुनिया को, ये धोके की-सी टट्‌टी है।

● ● ●

लो सब्रो-क़नाअत[1] साथ मियाँ, सब छोड़िये बातें लोभ भरी,
जो लोभ करे उस लोभी को, नहीं खेती होती जान हरी,
सन्तोष तवक्कुल[2] हिरनों ने, जब हिर्स[3] की खेती आन चरी,
फिर देख तमाशे कुदरत के, और लूट बहारें हरी भरी,
जब आशा-तिशना[4] दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

गर हिर्सो-हवा[5]-ओ-लालच की, है दौलत तेरे पास धरी,
तू खाक समझ इस दौलत को, क्या सोना रूपा लाल ज़री,
हाथ आया जब तोख दरब[6], तब सब दौलत पर धूल पड़ी,
कर ऐश मज़े सन्तोखी बन, जय बोल मुरलियावाले की,
जब आशा-तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए बम शंकर बोली हरी हरी।

इस हर्सो-हवा के बीजों को, जो लोभी दिल में बोते हैं,
वो चिन्ता मारे लोभ भरे, नित ख़्वार[7] हमेशा होते हैं,
जो हाथ पसारे लालच कर, वो माथा कूट के रोते हैं,
और जिन्होंने खींच लिया, वो पांव पसारे सोते हैं,
जब आशा-तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हूए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

इस लोभपुरी की गलियों की, जब मुँह पर तेरे धूल पड़ी,
बेचैन रहेगा हर साअत[8] आराम न होगा एक घड़ी,

---

१. सन्तोष २. सन्तोष, भगवान के भरोसे रहना ३. लोभ ४. लालच, मोस-माया ५. लालच मोह-माया ६. धन ७. ज़लील ८. घड़ी, समय

चल लोभ के सर पर जूती मार, और तन पर मारछड़ी,
कर सुमरन कुंज-बिहारी का, जैबोल मुकट की घड़ी-घड़ी,
जब आशा-तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोली हरी हरी।
ये शहद बुरा है लालच का, इस मीठे को मत खा प्यारे,
ये शहद नहीं ये ज़हर निरा, इस ज़हर उपर मत जा प्यारे,
जो मक्खी इसमें आन फंसी, फिर पंख हे रलिपटा प्यारे,
सर पटके रोवे हाथ मले, है लालच बुरी बला प्यारे,
जब आशा-तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।
गर हिर्स-ओ-हवा[1] के फन्दे में, तू अपनी उम्र गंवावेगा,
ना खाने का फल देखेगा, ना पाने का सुख पावेगा,
इक दो कपड़े के तार सिवा, कुछ साथ न तेरे जावेगा,
ए लोभी बन्दे लोभ भरे, तू मरकर भी पछतावेगा,
जब आशा तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।
है जब तक तुझ में लोभ भरा, तू चोर उचक्का तगड़ा है,
है पेच पुरानी पगड़ी से, जो सर पर तेरा पगड़ा है,
हर आन किसी से किस्सा है, हर वक्त किसी से झगड़ा है,
कुछ मीन नहीं, कुछ मेख नहीं, सब हिर्सो-हवा का झगड़ा है
जब आशा तिशना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी,
सब चैन हुए आनन्द हुए, बमशंकर बोलो हरी हरी।

---

१. लोभ, मोह-माया २. धन, सोना

ज़र[४] की जो मोहब्बत तुझे पड़ जायगी बाबा,
दुख इसमें तेरी रूह, बहुत पायगी बाबा,
हर खाने को हर पीने को, तरसायगी बाबा
दौलत जो तेरे यां है, न काम आयगी बाबा,
फिर क्या तुझे अल्लाह से, मिलवायगी बाबा।

दौलत जो तेरे पास है, रख याद तू ये बात,
खा तू भी और अल्लाह की, कर राह में खैरात,
देने ही से इसके, तेरा ऊंचा रहेगा हात,
और यां भी तेरी गुजरेगी, सौ ऐश[१] से औक़ात[२],
और वाँ भी तुझे सैर ये, दिलायगी बाबा।

दाता की तो मुश्किल कोई अटकी नहीं रहती,
चढ़ती है पहाड़ों के ऊपर, नाव सखी[३] की,
तो याद ये रख बात, कि जब आयेगी सख़्ती,
खुश्की में तेरी नाव, ये डुबायगी बाबा।

गर नेक कहाता है, कर इस जाय कुछ एहसान,
हिन्दू को खिला पूरी, मुसलमान को खिला नान[५]
खा तू भी इसे शौक़ से, और ऐश पै रख ध्यान,
तू इसको न खावेगा, तो ये बात यक़ीं जान,
इक रोज़ ये खन्दी, तुझे खा जायगी बाबा।

उससे यही बेहतर है, तू ही अब इसे खाजा,
बेटों को रफीक़ों[६] को. अजीज़ों[७] को खिला जा,

---

१. आराम २. समय ३. दाना ४. कंजूसी ५. रोटी ६. मित्र ७. सम्बन्धी

सब रूबरू अपने, मए-इशरत[1] में उड़ा जा,
फिर शौक़ से हंसता हुआ, जन्न को चला जा,
वरना तुझे हर दुख में, ये फंसवायगी बाबा।

ये तो न किसी पास रही है न रहेगी,
जो और से करती रही, वो तुझसे करेगी,
कुछ शक नहीं इसमें, जो बढ़ी है सो घटेगी,
जबतक तू जियेगा, तुझे ये चैन न देगी,
और मरते हुए पर, ये ग़ज़ब ढायेगी बाबा।

जब मौत का होवेगा, तुझे आन के धड़का,
और नज़ाअ[2] तेरे आन के, दम देवेगी भड़का,
जब इसमें तू अटकेगा, न दम निकलेगा फड़का,
कुप्पों में रूपै[3] डाल के, जब देवेंगे खड़का,
तब तन से तेरे जान निकल जायगी बाबा।

तू लाख अगर, माल के सन्दूक भरेगा,
है ये तो यक़ीं आखिरश, इक दिन तू मरेगा,
फिर बाद तेरे, इसपै जो कोई हाथ धरेगा,
और नाच मज़ा देखेगा, और ऐश करेगा,
और रूह तेरी क़ब्र में चिल्लायगी बाबा।

---

१. भोग विलास २. दम निकलते वक्त की हालत ३. एक तरह का कपड़ा

ज़रदार है तो हरगिज़, मत मार अपने मन को,
तनज़ेब[1] तनसुखों[2] से, तरसा न अपने तन को,
जो नर चलन चलै है, चल तू भी उस चलन को.
मुरशद[3] का है ये नुक़ता, रख याद इस सखुन[4] को,
दिल की खुशी की ख़ातिर, चख़ डाल माल-धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

ये न्यामतें हैं जितनी, जो कुछ मिले सो खाजा,
ताश[5] और वावले में, इक बार जगमगा जा,
पापी बख़ील मत बन, दाता सखी कहा जा,
इकदम तू अपना डंका, मन मानता बजा जा,
दिल की खुशी की खातिर, चख डाल माल धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

सन्दूक में जो ज़र है, उसको भी ले गवाँदे,
मय[6] के बहा के नाले, तबलों को खड़खड़ा दे,
कोठे मकां हवेली, सब खोद कर खुलादे,
कड़ियाँ तलक जलादे, ईंटें तलक उड़ादे,
दिल की खुशी की ख़ातिर, चख़ डाल माल धन को।

---

१. २. कपड़े की किस्में ३. गुरु ४. बात, कलाम ५. एक प्रकार का कपड़ा ६. शराब

गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

जो जो बखील[1] कहन, ज़र छोड़ कर मरेगा,
या खायगा जवाई, या खालसा[2] लगेगा,
तेरी बद्दी है जो कुछ, राहे ख़ुदा में देगा,
खाता खिलाता हंसता, तू भी सदा रहेगा,
दिल को खुशी को ख़ातिर, चख डाल माल धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न राख कफ़न को।

जिसने ये ज़र दिया है, फिर वो ही धन भी देगा,
मालो मकां हवेली, बाग़-ओ चमन भी देगा,
जीता रहेगा जब तक, खाने को अन भी देगा,
मर जायगा, तो वो ही तुझको कफ़न भी देगा,
दिल की खुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख कफ़न को।

जितने गड़े दबे हैं, सब खाले और खिलाले,
रख धुन उसी की दिल में, जब खाले और खिलाले,
अपना समझ उसी को, अब खाले और खिलाले,
अब तो नज़ीर तू भी, सब खाले और खिलाले,
दिल की खुशी की ख़ातिर, चख डाल माल-धन को,
गर मर्द है तू आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को।

---

१. कंजूस २. सरकार ले लेगी

दुनिया अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स[१] यां की सात ले,
नेकी का बदला नेकी है, बद से बदी की बात ले,
मेवा खिला मेवा मिले, फल फूल दे फल-पात ले,
आराम दे आराम ले, दुख-दर्द दे आफ़ात[२] ले,
कलयुग नहीं करजुग है ये, यां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

कांटा किसी के मत लगा, गो मिस्ले गुल[३] फूला है तू,
वो तेरे हक़ में तीर है, किस बात पै फूला है तू,
मत आग में डाल और को, फिर घास का पूला है तू,
सुन रख ये नुक़्ता[४] बेख़बर, किस बात पर फूला है तू,
कलजुग नहीं करजुग है ये, यां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

जो और की बस्ती रख, उसका भो बस्ता है पुरा,
जो और के मारे छुरी, उसके भी लगता है छुरा,
जो और की तोड़े धुरी, उसका भी टूटे है धुरा,
जो और की चेते बदी, उसका भी होता है बुरा,
कलजुग नहीं करजुग है ये, यां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स यां तय्यार है,
आराम में आराम है, आज़ार[५] में आज़ार है,

१. पैदावार, कमाई २. मुसीबतें ३. फूल ४. सीख ५. दुःख

दुनिया न जान इसको मियां, दरिया की ये मंजधार है,
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है,
कलजुग नहीं करजुग है ये, यां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

कर चुका जो कुछ करना हो यां. ये दम तो कोई आन है,
नुक़सान में नुक़सान है, एहसान में एहसान है,
तुहमत में याँ तुहमत लगे, तूफ़ान में तूफ़ान है,
रहमान को रहमान है, शैतान को शैतान है,
कलजुग नहीं करजुग है ये, यां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

अपने नफ़े के वास्ते, मत और का नुक़सान कर,
तेरा भी नुक़सां होयगा, इस बात पर तू ध्यान कर,
खाना जो तू खा देखकर, पानी पिये तू छान कर,
यां पांव को रख फूंक कर, और खौफ़ से गुज़रान कर,
कलजुग नहीं करजुग है ये, याँ दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले।

● ● ●

हैं दुनिया जिसका नांव मियाँ, ये और तरह की बस्ती है,
जो मंहगों को ये महंगी है, और सस्तों को ये सस्ती है,
याँ हरदम झगड़े उठते हैं, हर आन अदालत बस्ती है,
गर मस्त करे तो मस्ती है, और पस्त करे तो पस्ती है,
कुछ देर नहीं अन्धेर-नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती[1] है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है.।

जो और किसी का मान रहे, तो उसका भी अरमान मिले,
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान मिले,
नुक़सान करे नुक़सान मिले, एहसान करे एहसान मिले,
जो जैसा जिसके साथ लगे, फिर वैसा उसको आन मिले,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और दलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो पार उतारे औरों को, उसकी भी पार उतरनी है,
जो ग़र्क़[2] करे फिर उसको भी, याँ डुबकों-डुबकों करनी है,
शमशीर,[3] तबर-बन्दूक, सनां[4] और नश्तर तीर नहरनी है,
याँ जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी वैसी भरनी है,
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त-ब-दस्ती है।
जो ऊपर ऊंचा बोल करे, तो उसका बोल भी बाला है,

१. न्याग-परायणता, २. डुबोना ३. तलवार ४. एक प्रकार का अस्त्र

ग्रौर दे पटके तो उसको भी, कोई ग्रौर पटकने वाला है,
बेजुर्मोंख़ता जिस जालिमने, मज़लूम[1] ज़िबह[2] कर डाला है,
उस ज़ालिम के भी लोहू का, फिर बहता नद्दी-नाला है,
कुछ देर नही ग्रन्धेर नहीं, इन्साफ़ ग्रौर ग्रदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो मिस्री ग्रौर के मुंह में दे, फिर वो भी शक्कर खाता है,
जो ग्रौर के तईं ग्रब टक्कर दे, फिर वो भी टक्कर खाता है,
जो ग्रौर को डाले चक्कर में, फिर वो भी चक्कर खाता है,
जो ग्रौर को ठोकर मार चले, फिर वो भी ठोकर खाता है,
कुछ देर नहीं ग्रन्धेर नहीं, इन्साफ़ ग्रौर ग्रदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

जो ग्रौर किसी को नाहक़ में, कोई झूठी बात लगाता है,
ग्रौर कोई ग़रीब ग्रौर बेचारा, हक़ नाहक़ में लुट जाता है,
वो ग्राप भी तो लुट जाता है, ग्रौर लाठी वाठी खाता है,
जो जैसा-जंसा करता है, फिर वैसा-वैसा पाता है,
कुछ देर नहीं ग्रन्धेर नहीं, इन्नाफ़ ग्रौर ग्रदलपरस्ती है,
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त-ब-दस्ती है।

---

१. पीड़ित २. वध करना, मारना

हैं मर्द वही कि जिन्हों का है फ़न[1] दुरुस्त[2]
हुरमत[3] उन्होंके वास्ते, जिनका चलन दुरुस्त,
रहता नहीं किसी का, सदा माल धन दुरुस्त,
दौलत रही किसी की, न बाग़ो चमन दुरुस्त,
जितने सख़ुन[1] हैं सब में. यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त ।
गर दौलतों से उसका भरा है तमाम घर,
बीमार हैं तो ख़ाक से बदतर है सब वो ज़र,
हो तन्दुरुस्त गरचे, ये मुफ़लिस[2] है सरबसर[3],
फिर ना किसी का खौफ़, ना हरगिज़ किसी का डर,
जितने सख़ुन हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त ।
आजिज़[4] हो या हक़ीर[5] हो, पर तन्दुरुस्त हो,
बेज़र[6] हो या अमीर हो, पर तन्दुरुस्त हो,
क़ैदी हो या असीर[7] हो, पर तन्दुरुस्त हो,
मुफ़लिस हो या फ़क़ीर हो, पर तन्दुरुस्त हो,
जितने सख़ुन हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त ।
परवा नहीं अगरचे, लिखा या पढ़ा न हो,
मोहताज़ हक़ सिवा पै किसी और का न हो,
हुस्नो-ज़माल[8] इल्मो-हुनर, गो मिला न हो,
इक तन्दुरुस्ती चाहिए, कुछ होवे या न हो,
जितने सख़ुन हैं सब में, यही है सख़ुन दुरुस्त,
अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त ।

---

१. पेशा, आचरण २. सही ३. सम्मान ४. बात, कलाम ५. निर्धन
६. बिलकुल ७. लाचार ८. तुच्छ ९. निर्धन १० बन्दी ११. सौन्दर्य

हैं इस हवा में क्या क्या बरसात की बहारें
सब्ज़ों की लहलहाहट बाग़ात[1] की बहारें
बून्दों की झमझमाहट क़तरात[2] की बहारें
हर बात के तमाशे हर घात की बहारें
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

बादल हवा के ऊपर हो मस्त जा रहें हैं
झड़ियों की मस्तियों से धूमें मचा रहे हैं
पड़ते हैं पा ी हर जा[3] जल-थल बना रहे हैं
गुलज़ार भीगते हैं सब्ज़े नहा रहें हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारे

मारे है मौज़[4] डाबर दरिया उमड़ रहे हैं
मोर-ओ-पपीहे कोयल क्या क्या उमड़ रहे हैं
झड़ कर रही में झड़ियां नाले उमड़ रहे हैं
बरसे हैं मेह झड़ाझड़ बादल घुमड़ रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

फूलों की सेज ऊपर सोते हैं कितने बन बन
सोहें गुलाबी जूड़े फूलों के हार अबरन
कितनों को घर है खाता सूना लगे जो आंगन
कोने में पड़ रही है सर मुंह लपेट सोगन[5]
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

१. बागों २. बूंदों ३. जगह ४. लहर ५. विरहणी

जो खुश है वह खुशी में काटे है रात सारी
जो ग़म में हैं उन्हों पर गुज़रे है रात भारी
सीनों से लग रही हैं जो हैं पिया की प्यारी
छाती फटे है उनकी जो हैं बिरह की मारी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

अब बिरहनों के ऊपर है सख़्त बेक़रारी
हर बूंद मारती है सीने उपर कटारी
बदली की देख सूरत कहती हैं बारी बारी
"है-है[१] न ली पिया ने अब के भी सुध हमारी"
क्या क्या मची हें यारो बरसात की बहारें

गाती हैं गीत कोई भूले पे करके फेरा
"मारू जी ! आज कीजे याँ रैन का बसेरा"
है खुश कोई, किसी को है दर्दो-ग़म ने घेरा
मुँह ज़र्द, बाल बिखरे और आंखों में अन्धेरा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

और जिनको अब मुहय्या[२] हुस्नों की ढेरियाँ हैं
सुर्ख़ और सुनहरे कपड़े, इश्रत की घेरियाँ हैं
महबूब दिलबरों की जुल्फ़ें बिखेरियां हैं
जुगनू चमक रहे हैं रातें अंधेरियाँ हैं।
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

१. हाय-हाय २. प्रस्तुत

कितनों को महलों अन्दर है ऐश का नज़ारा
या सायवान सुथरा या बांस का ओसारा
करता है सैर कोई कोठे का ले सहारा
मुफ़लिस[1] भी कर रहा है पूले तले गुज़ारा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

छत गिरने का किसी जा गुल-शोर हो रहा है
दीवार का भी धड़का कुछ होश खो रहा है
डर डर हवेली वाला हर आन रो रहा है
मुफ़लिस सो झोंपड़े में दिलशाद[2] सो रहा है
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

मुद्दत से हो रहा है जिनका मकां पुराना
उठकर है उनको मेंह में हर आन छत पे जाना
कोई पुकारता है, "टुक मोरी खोल आना"
कोई कहे है, "चल भी क्यों हो गया दीवाना"
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

सब्ज़ों पे बीर बहूटी टीलों उपर धतूरे
पिस्सू से मच्छरों से रोये कोई बिसूरे
बिच्छू किसी को काटे कीड़ा किसी को घूरे
आँगन में कनसलाई कोनों में कनखजुरे
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

१. ग़रीब २. प्रसन्न

फुंसी किसी के तन में सर पर किसी के फोड़े
छाती पे गर्मी दाने और पीठ में ददोड़े
खा पूरियां किसी को हैं लग रहे मरोड़े
आते हैं दस्त जैसे दौड़ें इराक़ी घोड़े
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने शराब पीकर हो मस्त छक रहे हैं
मै[1] की गुलाबी आगे प्याले छलक रहे हैं
होता है नाच घर घर घूंघरू झनक रहे हैं
पड़ता है मेंह झड़ाझड़ तबले खड़क रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

हैं जिनके तन मुलायम मैदे को जैसे लोई
वह इस हवा में खासी ओढ़े फिरें हैं लोई
और जिनकी मुफ़लिसी ने शर्मो-हया है खोई
है उनके सर पे सिरकी या बोरियों की खोई
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो इस हवा में यारो दौलत में कुछ बड़े हैं
है उनके सर पे छतरी हाथी उपर चढ़े है
हमसे ग़रीब-ग़ुरबा कीचड़ में गिर पड़े हैं
हाथों में जूतियां हैं और पांयचे चढ़े हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात को बहारें

• • •

१. शराब

दुनिया के बीच यारो सब ज़ीस्त[1] का मज़ा है
जीतों के वास्ते हो यह ठाठ सब ठठा है
जब मर गये तो आख़िर सब उम्र ख़ाके-पा[2] है
नै[3] बाप है न बेटा नै यार आशना है
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

है दम की बात जो थे मालिक ये अपने घर के
जब मर गये तो हरगिज़ घर के रहे न दर के
यूं मिट गये कि गोया थे नक़्श[4] रहगुज़र[5] के
पूछा न फिर किसी ने यह थे मियां किधर के
डरती है रूह यारो और जी भी काँपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

मरने के बाद उल्फ़त कोई न फिर जतावे
नै पास बेटा आवे नै भाई मुंह लगावे
जो देख उसकी सूरत दहशत से भाग जावे
इस मर्ग[6] की जफ़ाएं[7], क्या क्या नहीं बनावे
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

---

१. जिन्दगी २. पाँवों की धूल ३. न ४. चिन्ह ५. रास्ता
६. मौत ७. निष्ठुरताएं

जब रूह तन से निकली आना नहीं यहां फिर
काहे को देखने है यह बाग़ो-बोस्तां[1] फिर
हाथी पे चढ़ के यां फिर, घोड़े पे चढ़के वां फिर
जब मर गये तो लोगो यह इश्रतें कहां फिर
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

घर हो बहिश्त जिसका और भर रही हो दौलत
असबाब इश्रतों के महबूब[2] खूबसूरत
फिर करते वक़्त उनको क्योंकर न होवे हसरत
क्या सख़्त बेबसी है क्या सख़्त है मुसीबत
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

खाने को उनके नेअ़मत सौ सौ तरह की आती
और वह न पावें टुकड़ा देखो टुक उनकी छाती
कौड़ी की झोंपड़ी भी छोड़ी नहीं है जाती
लेकिन 'नज़ीर' सब कुछ यह मौत है छुड़ाती
डरतो है रूह यारो और जी भी कांपता है
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है

● ● ●

१. बाग़ २. प्रियतम

कल राह मे जाते जो मिला रीछ का बक्चा
ले आये वहीं हम भी उठा रीछ का बच्चा
सौ नेअ़मतें खा-खाके पला रीछ का बच्चा
जिस वक़्त बड़ा रीछ हुआ रीछ का बच्चा
जब हम भी चले साथ चला रीछ का बच्चा

था हाथ में इक अपने सवा मन का जो सोंटा
लोहें की कड़ी जिसपे खड़कती थी सरापा[1]
काँधे पे चढ़ा झोलना और हाथ में प्याला
बाज़ार में ले आये दिखाने को तमाशा
आगे तो हम और पीछे था वह रीछ का बच्चा

था रीछ के बच्चे के वो गहना जो सरासर
हाथों में कड़े सोने के बजते थे झमक कर
कानों में दुर[2] और घुंघरू पड़ें पाँव के अन्दर
वह डोर भी रेशम की बनाई थी जो पुर-ज़र[3]
जिस डोर से यारो था बंधा रीछ का बच्चा

झुमके वो झमकते थे पड़े जिसपे करनफूल
मुक़्क़ीश[3] की लड़ियों की पड़ी पीठ ऊपर भूल
और उनके सिवा कितने बिठाये थे जो गुलफूल
यूं लोग गिरे पड़ते थे सर-पाँव की सुध भूल
गोया वो परी था कि न था रीछ का वच्चा

---

१. ऊपर से नीचे तक २. मोती ३. सोने के काम की ४. सोने-चांदी के तारों के काम की

इक तरफ़ को थीं सैकड़ों लड़कों की पुकारें
इक तरफ़ को थीं पीरो-जवानों की क़तारें
कुछ हाथियों की क़ीक़ और ऊंटों की डकारें
गुल, शोर, मज़े, भीड़, ठट्ठ, अम्बोह[1], बहारें
जब हमने किया लाके खड़ा रीछ का बच्चा

कहता था कोई हमसे "मियाँ आओ क़लन्दर[2]
वह क्या हुए अगले वो तुम्हारे थे वो बन्दर"
हम उनसे ये कहते थे, "ये पेशा है क़लन्दर
हाँ छोड़ दिया बाबा उन्हें जंगले[3] के अन्दर
जिस दिन से खुदा ने ये दिया रीछ का बच्चा

मुद्दत में अब इस बच्चे को हमने सधाया
लड़ने के सिवा नाच भी है इसको सिखाया"
यह कहके जो ढपली के तईं गत पे बजाया
इस ढब से उसे चौक के जमघट में नचाया
जो सब की निगाहों में खुबा रीछ का बच्चा

फिर नाच के वह राग भी गाया तो वहाँ वाह
फिर कहरबा नाचा तो हर इक बोली ज़बाँ "वाह"
हर चार तरफ़ सेती[4] कहें पीरो-जवाँ "वाह"
सब हंसके ये कहते थे "मियाँ वाह, मियाँ वाह,
क्या तुमने दिया खूब नचा रीछ का बच्चा"

• • •

१. भीड़ फकीर ३. जंगल ४. से

क्या क़हर है यारो जिसे आजाए बुढ़ापा
और ऐशे-ज़वानी के तईं खाए बुढ़ापा
इशरत को मिला ख़ाक में ग़म लाए बुढ़ापा
हर काम को हर बात को तरसाए बुढ़ापा
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आसिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

आगे तो परीज़ाद ये रखते थे हमें घेर
आते थे चले आप जो लगती थी ज़रा देर
सो आके बुढ़ापे ने किया हाय ये अन्धेर
जो दौड़ के मिलते थे वो अब लेते हैं मुंह फेर
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

मजलिस में जवानों की तो साग़र[1] हैं छलकते
चुहले हैं, बहारें हैं, परीरू[2] हैं झमकते
हम उनके तईं दूर से हैं रश्क[3] से तकते
वह ऐशो-तरब[4] करते हैं हम सर हैं पटकते
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

---

१. (शराब के) प्याले २. सुन्दरियाँ ३. ईर्ष्या ४. रास-रंग

थे हम भी जवानी में बहुत इश्क़ के पूरे
वह कौन से गुल-रू[1] हैं जो हमने नहीं घूरे
अब आके बुढ़ापे ने किये ऐसे अधूरे
पर झड़ गये, दुम उड़ गयी, फिरते हैं लंडूरे
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

क्या यारो उलट हमसे गया हाय ज़माना
जो शोख़ कि थे अपनी निगाहों का निशाना
छेड़े है कोई डाल के दादा का बहाना
कोई ये कहे है कि "कहाँ जाते हो नाना ?"
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

बूढ़ों में अगर जावें तो लगता नहीं वाँ दिल
वाँ क्योंकि लगे ? दिल तो है महबूबों[2] का मायल
महबूबों में जावें है तो सब छेड़ें हैं मिल-मिल
क्या सख्त मुसीबत है पड़ी आन के मुश्किल
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

पनघट को हमारी अगर असवारी गयी है
तो वां भी लगी साथ यही ख्वारी गयी है

---

१. सुन्दरियाँ २. प्रेयसियाँ

थे हम भी जवानी में बहुत इश्क़ के पूरे
वह कौन से गुल-रू[1] हैं जो हमने नहीं घूरे
अब आके बुढ़ापे ने किये ऐसे अधूरे
पर झड़ गये, दुम उड़ गयी, फिरते हैं लंडूरे

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

क्या यारो उलट हमसे गया हाय ज़माना
जो शोख़ कि थे अपनी निगाहों का निशाना
छेड़े है कोई डाल के दादा का बहाना
कोई ये कहे है कि "कहाँ जाते हो नाना ?"

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

बूढ़ों में अगर जावें तो लगता नहीं वाँ दिल
वाँ क्योंकि लगे ? दिल तो है महबूबों[2] का मायल
महबूबों में जावें है तो सब छेड़ें हैं मिल-मिल
क्या सख़्त मुसीबत है पड़ी आन के मुश्किल

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

पनघट को हमारी अगर असवारी गयी है
तो वां भी लगी साथ यही ख़्वारी गयी है

---

१. सुन्दरियाँ २. प्रेयसियाँ

सुनते है कि कहती हुई पनिहारी गयी है
"लो देखो बुढ़ापे में ये मत मारी गयी है"
सब चीज़ को होता हैं बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

दरिया के तमाशे को अगर जायें तो यारी
कहता है हर-इक देख के "जाते हो कहाँ को?"
और हँस के शरारत से कोई पूछे है बद-ख़ू[१]
"क्यों, ख़ैर है? क्या ख़िज्र[२] से मिलने को चले हो?"
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

गर नाच में जावें तो ये हसरत है सताती
जो नाचे है काफ़िर वो नहीं ध्यान में लाती
औरों की तरफ़ जावे तो आंखें हैं लड़ाती
पर हमको तो काफ़िर वो अंगूठा है दिखाती
सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

गर नायका उनमें कोई बूढ़ी है कहाती
अलबत्ता बुढ़ापे पे वो टुक रहम है खाती
फीकी-सी पुरानी-सी लगावट है जताती
पर क़हर है हमको वो ज़रा खुश नहीं आती[३]

---

१. दुष्ट २. पानी के अदृश्य देवता ३. अच्छी नहीं लगती

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

थे जैसे जवानी में किये धूम - धड़क्के
वैसे ही बुढ़ापे में छुटे आन के छक्के
सब उड़ गये काफ़िर वो नज़ारे वो झमक्के
अब ऐश जवानों को हैं और बूढ़ों को धक्के

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

यह होंठ जो अब पोपले यारो हैं हमारे
इन होठों ने बोसों के बड़े रंग हैं मारे
होते थे जवानी में तो परियों के गुज़ारे
और अब तो चुड़ैल आन के इक लात न मारे

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

करते थे जवानी में तो सब आप से[१] आ चाह
और हुस्न दिखाते थे वो सब आन के दिल-ख़्वाह[२]
यह क़हर बुढ़ापे ने किया आह 'नज़ीर' आह
अब कोई नहीं पूछता अल्लाह ही अल्लाह

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाय बुढ़ापा

● ● ●

१. स्वयं हा २. मनमोहक

तारीफ़ करूं अब मैं क्या-क्या उस मुरली अधर बजैया की
नित सेवा करूं फिरैया की और बन-बन गऊ-चरैया की
गोपाल, बिहारी, बनवारी, दुख हरना, मेह्र[1] करैया की
गिरधारी, सुन्दर, श्याम बरन और हलधन जू के भैया की
यह लीला है उस नन्द-ललन, मनमोहन, जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडीत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की

इक रोज़ खुशी से गेंद तड़ी ले मोहन जमुना तीर गये
वाँ खेलन लागे हंस-हंस के यह कहकर ग्वाल और बालन से
जो गेंद पड़े जा जमुना में फिर जाकर लावे जो फेंके
वह आप ही अंतरजामी थे क्या उनका भेद कोई पावे
यह लीला है उस नन्द-ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

वाँ किशन मदन मनमोहन ने सब ग्वालन से यह बात कही
और आप ही झप से गेंद उठा उस कालीदह में डाल दई
फिर आप ही झप से कूद पड़े और जमुना जी में डुबकी ली
सब ग्वाल सखा हैरान रहे पर भेद न समझे इक रत्ती
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

---

१. कृपा

यह बात सुनी ब्रज नारिन ने तब घर-घर इसकी धूम मची
नन्द और जसोदा आ पहुँचे सुध भूल गई अपने तन की
आ जमुना पर गुल-शोर हुआ और ठठ्ठ बंधे और भीड़ लगी
कोई आंसू डाले हाथ मले पर भेद न जाने कोई भी
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

जिस दह में कूदे मनमोहन वाँ आन छुपा था इक काली
सर पांव से उनके आ लिपटा उस दह के भीतर देखते ही
फन मारे, पहुँचा ज़ोर किये और पहरों तक वाँ कुश्ती की
फुंकारें लीं, बल तेज़ किये, पर किशन रहे वां हंसते ही
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

जब काली ने सौ पेज किये फिर एक कला वाँ श्याम ने की
इस तौर बढ़ाया तन अपना जो उसका निकलन लागा जी
फिर नाथ लिया उस काली को इक पल भर में ना देर करी
वह हार गया और स्तुति की, हर नागिन भी फिर पाँव पड़ी
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैवा की

उस दह में सुन्दर, श्याम बरन उस काली को जब नाथ चुके
ले नाथ को उसकी हाथ अपने फिर हर फन ऊपर नृत्य किये
कर बस में अपने काली को मुसक्याने, मुरली अधर धरे
जब बाहर आये मनमोहन सब खुश हो जै जै बोल उठे
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

थे जमुना पर उस वक़्त खड़े वाँ जितने आकर नर-नारी
देख उनको सब खुश-हाल हुए जब बाहर निकले बनवारी
दुख-चिन्ता मन से दूर हुए आनन्द की आई फिर बारी
सब दरशन पाकर शाद हुए और बोले "जै जै, बलिहारी"
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

नन्द और जसोदा के मन में सुध भूली बिसरी फिर आई
सुख चैन हुए, दुख भूल गये कुछ दान और पुन्न की ठहराई
सब व्रज-बासिन के हिरदै में आनन्द ख़ुशी उस दम छाई
उस रोज़ उन्होंने यह भी 'नज़ीर' इक लीला अपनी दिखलाई
यह लीला है उस नन्द ललन मनमोहन जसुमति-छैया की
रख ध्यान सुनो दंडोत करो जै बोलो किशन कन्हैया की

● ● ●

दुनिया के अमीरों में यां किसका रहा डंका
बरबाद हुए लशकर फ़ौजों का थका डंका
आशिक़ तो ये समझे हैं अब दिल में बना डंका
जो भंग पियें उनका बजता है सदा डंका
कूंडो के नक़ारे पर खतके का लगा डंका
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका

उल्फ़त के ज़मर्रुद[1] की यह खेत की बूंटी है
पत्तों की चमक उसके कमख़्वाब की बूटी है
मुंह जिसके लगी उससे फिर काहे को छूटी है
यह तान टिकोरे की इस बात पे टूटी है
कूंडी के नक़ारे पर खतके का लगा डंका
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका

हर आन खड़ाके से इस ढब का लगा रगड़ा
जो सुनके खड़क उसकी हो बन्द सभी दगड़ा
चक्कान चढ़ा गहरा और बाँध हरा पगड़ा
क्या सैर की ठहरेगी, टुक छोड़के यह झगड़ा
कूंडो के नक़ारे पर खतके का लगा डंका
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका

---

१. पुखराज

इक प्याले के पीते हो हो जायेगा मतबाला
आँखों में तेरी आकर खिल जायेगा गुल्लाला
क्या क्या नज़र आवेगी हरियाली व हरियाली
आ, मान कहा मेरा, ऐ शोख़ नये लाला
कूंडी के नक़ारे पर ख़तके का लगा डंका
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका

हैं मस्त वही पूरे जो कूंडी के अन्दर हैं
दिल उनके बड़े दरिया जी उनके समन्दर हैं
बैठे हैं सनम[1] बुत हो और झूमते मन्दिर हैं
कहते हैं यही हंस-हंस आशिक़ जो क़लन्दर[2] हैं
कूंडी के नक़ारे पर ख़तके का लगा डंका
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका

सब छोड़ नशा प्यारे पीवे तू अगर सब्ज़ी[3]
कर जावें वहीं तेरी ख़ातिर[4] में असर सब्ज़ी
हर बाग़ में हर जा[5] में आजावे नज़र सब्ज़ी
तेरी भी 'नज़ीर' अब तो सब्जी में है सरसब्ज़ी
कूंडी के नक़ारे पर ख़तके का लगा डंका
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका

● ● ●

---

१. मूर्तियाँ २. मस्त फ़क़ीर ३. भंग ४. दिल ५. जगह

दुनिया में अपना जी कोई बहला के मर गया
दिल तंगियों से और कोई उकता के मर गया
आक़िल[१] था वह तो आप[२] को समझा के मर गया
बे-अक़्ल छाती पीट के घबरा के मर गया

दुख पाके मर गया कोई सुख पाके मर गया
जीता रहा न कोई हर-इक आके मर गया

दिन रात दुन मची है यहाँ और पड़े है जंग
चलती है नित अजल की सनां[४] गोली और तुफ़ंग[५]
जिसका क़दम बढ़ा वो मुआ यूं ही बे-दिरंग[६]
जो जी छुपा के भागा तो उसका हुआ ये रंग

वह भागने में तेग़ो-तबर[७] खाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

गर लाख इशरतों से है दिल में धूमधाम
या सौ मुसीबतों से हुआ ग़म का अज़दहाम[८]
आख़िर को जब अजल ने किया आन कर सलाम
ग़म में किसी हसीं के कोई हो गया तमाम

कोई हूर परियाँ छाती से लिपटा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

---

१. बुद्धिमान २. स्वयं ३. मौत ४. भाला ५. बन्दूक ६. तुरन्त
७. तलवार और फरसा ८. भीड़

पढ़कर नमाज़ कोई रहा पाक बा-वज़ू[1]
कोई शराब पीके रहा मस्त कू-ब-कू[2]
नापाकी पाकी मौत के ठहरी न रू-ब-रू[3]
कोई इबादतों[4] से मुम्रा होके सुर्ख़-रू[5]
नापाक रू-सियाह[6] भी पछता के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

बिलफ़र्ज़ गर किसी को हुई याद कीमिया[7]
या मुफ़लिसी[8] में एक ने ख़ूने-जिगर पिया
कोई ज़ियादा उम्र से इक दम[9] नहीं जिया
सूखी किसी ने रोटी चबा ग़म में जो दिया
क़लिया पुलाव ज़र्दा कोई खा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

पहना लिबासे-ख़ूब अगर इत्र का भरा
या चीथड़ों की गुदड़ी कोई ओढ़कर मरा
आख़िर को जब अजल की चली आनकर हवा
पूले के झोंपड़े को कोई छोड़कर चला
बाग़ो-मकां महल कोई बनवा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

गर एक बे-वक़ार[10] हुआ एक क़द्रदार
सर पर लगा जब आन के तेग़े-अजल का वार

---

१. पवित्र २. गली-गली में ३. सामने ४. उपासनाओं ५. नेक-नाम ६. बदनाम ७. रसायन जिससे तांबे को सोना बना लिया जाता है ८. निर्धनता ९. सांस १०. सम्मान-रहित

बेक़द्री काम आयी किसी का न कुछ वक़ार
था बेहया सो वह तो मुआ खोके नंगो-आर[1]
और जिसको शर्म थी सो वो शर्मा के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

कोई ठुड्डी[2] चाबता था कोई मोठ और मटर
जिस दम क़ज़ा ने हाथ में ली तेग़ और सिपर[3]
काम आयी कुछ फ़क़ीरी न कुछ तख़्त और छतर
यह ख़ाक पर मुआ वो मुआ तख़्त के उपर
थी जिसकी जैसी क़द्र वो बतला के मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

कितनों में बढ़ के ऐसी बढ़ी उल्फ़तों की चाह
जो जिस्मो - जान एक हुए उनके वाह वाह
आशिक़ मुआ तो मर गया माशूक़ ख़ामख़्वाह
माशूक़ मर गया तो वो आशिक़ भी करके आह
उस गुल-बदन[4] की क़ब्र उपर जाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

क्या काले पीले शक्ल के क्या गोरे गुल-अज़ार
आशिक़ कोई है और कोई माशूक़ तरहदार
आक़िल,हकीम-ओ-आमिलो-फ़ाफ़िल[6] रिसालदार
पंडित, नजूमी[7], वैद, चे[8] दाना चे होशियार[9]

---

१. शर्म २. एक मोटा अनाज ३. ढाल ४. सुंदर ५. फूल-से मुखड़े वाले ६. राज अधिकारी और विद्वान ७. ज्योतिषी ८. क्या ९. बुद्धिमान

हैं दो जहाँ के सुल्तां हज़रत सलीम चिश्ती
आलम के दोनों ईमां-हज़रत सलीम चिश्ती
सरदफ़्तरे-मुसलमां[1] हज़रत सलीम चिश्ती
मक़बूले-ख़ासे-यज़्दां[2] हज़रत सलीम चिश्ती
सरदारे-मुल्के-इरफ़ां[3] हज़रत सलीम चिश्ती

शाहों के बादशा हो बा-ताज बा-लिवा[4] हो
और क़िब्लए-सफ़ा[5] हो और काबए-ज़िया[6] हो
ख़िलक़त[7] के रहनुमा हो, दुनिया के मुक्तदा[8] हो
तुम साहबे-सख़ा[9] हो महबूबे-किब्रिया[10] हो
है तुम से ज़ेबे-इमकां[11] हज़रत सलीम चिश्ती

शाहो-गदा हैं ताबेअ़[12] सब तेरी मुमलिकत[13] के
लायक़ तुम्हीं हो शाहा इस क़द्रो-मंज़िलत[14] के
परवर्दा[15] हैं तुम्हारे सब ख़्वाने-मक्रमत[16] के
शाहा शरफ़[17] तू बख़्शे ख़ालिक़[18] की सल्तनत के
और तुम हो मीरे-सामां[19] हज़रत सलीम चिश्ती

---

१. मुसलमानों के नायक २. ईश्वर के परम प्रिय ३. ज्ञान के देश के राजा ४. झंडे वाले ५. पवित्रता के पूज्य ६. प्रकाश के पूज्य ७. संसार ८. पथ-प्रदर्शक ९. दानी १०. ईश्वर के प्यारे ११. दुनिया की रौनक़ १२. मातहत १३. राज्य १४. सम्मान १५. पाले हुए १६. कृपा का दान १७. इज्ज़त १८. ईश्वर १९. संसार के नायक

है नामे - पाक तेरा मशहूर शहरो-बन में
करती हैं याद तुमको ये जानें है जो तन में
है ख़ुल्क़[१] की तुम्हारे ख़ुशबू गुलो-समन[२] में
ख़िदमत में हैं तुम्हारी फ़िरदौस[३] के चमन में
जन्नत के हूरो-ग़िलमां, हज़रत सलीम चिश्ती

है सल्तनत जहाँ की सब तेरे ज़ेरे-फ़रमां
चाकर हैं तेरे दर के फ़ग़फ़ूर[४] और ख़ाक़ां[५]
ख्वाने-करम पे तेरे हैं खल्क़[६] सारी मेहमां
हैं हुक्म में तुम्हारे जिन्नो - परी - ओ - इंसाँ
हो वक़्त के सुलेमाँ हज़रत सलीम चिश्ती

तुम सबसे हो मुअज़्ज़म[७] और सबसे हो मुकर्रम[८]
ख़िलक़त[९] हुई तुम्हारी सब नूर से मुजस्सम[१०]
और ख़ूबियाँ जहाँ की तुम पर हुईं मुसल्लम[११]
अब्रे-करम[१२] से तेरे दायम[१३] है सब्ज़ो-ख़ुर्रम[१४]
आलम का सब गुलिस्ताँ हज़रत सलीम चिश्ती

पुश्तो-पनाह[१५] हो तुम हर इक गदा-व-शह के
मुहताज हैं तुम्हारी इक लुत्फ़ की निगह के

---

१. शिष्टता २. गुलाब और बेला ३. स्वर्ग ४. पुराने चीन के बादशाह ५. पुराने तुर्क बादशाह ६. संसार ७. महान् ८. सम्मानित ९. रचना १०. पूर्णतः ११. पूरी १२. कृपा के बादल १३. सदा १४. प्रसन्न और हरा १५. सहारा

मंज़िल पे आके पहुँचे सालिक[1] तुम्हारी रह के
ख़ाके-क़दम तुम्हारी और चश्म[2] मेह्रो-मह[3] के
हो रौशनो के सामाँ हज़रत सलीम चिश्ती

आ़लम है सब मुअ़त्तर[4] तेरे करम[5] की बू से
हुरमत है दोस्तों को हज़रत तुम्हारे रू से
यह चाहता हूं अब मैं सौ दिल की आरज़ू से
रखियो 'नज़ीर' को तुम दो जग में आबरू से
ऐ मूजिदे-हर-अहसाँ[6] हज़रत सलीम चिश्ती

---

१. चलने वाले २. आंख ३. सूर्य-चन्द्र ४ सुगंधित ५ कृपा ६ हर कृपा करने बाले

जब पैरने को रुत में दिलदार पैरते हैं
आशिक़ भी साथ उनके ग़मख़्वार पैरते हैं
भोले सयाने नादां हुशियार पैरते हैं
पीरो-जवान लड़के अय्यार पैरते हैं
अदना[1] ग़रीब मुफ़लिस[2] ज़रदार[3] पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

बरसात में जो आकर चढ़ता है ख़ूब दरिया
हर जा खुरी व चादर, बन्द और नांद, चकवा
भेंडा, भंवर, उछालन, चक्कर, सर्मेट, नाला
भेंडा गंभीर, तख़्ता, कस्सी, पछाड़ गर्रा
वां भी हुनर से अपने हुशियार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

तिरबेनी में अहाहा होती हैं क्या बहारें
ख़िलक़त[5] के ठठ, हज़ारों पैराक की क़तारें
पैरें, नहावें, उछलें, कूदें, लड़ें, पुकारें
ले ले वो छींट ग़ोते खा खा के हाथ मारें
क्या क्या तमाशे कर कर इज़्हार[6] पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

जमना के पाट गोया सहने-चमन हैं बारे
पैराक उसमें पैरें जैसे कि चांद तारे

१ छोटे २ निर्धन ३ धनी ४ जगह ५ दुनिया
६ दिखाकर

मुंह चांद के से टुकड़े तन गोरे प्यारे प्यारे
परियों से फिर रहे हैं मंझधार और किनारे
कुछ वार पैरते हैं कुछ पार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

कितने खड़े हैं पैरें अपना दिखा के सीना
सोना चमक रहा है हीरे का ज्यूं नगीना
आधे बदन पे पानी आधे पे है पसीना
सर्वो[1] का बह चला है गोया कि इक क़रीना[2]
दामन कमर पे, बांधे दस्तार[3] पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ए यार पैरते हैं

जाते हैं इनमें कितने पानी पे साफ़ सोते
कितनों के हाथ पिंजरे कितनों के सर पे तोते
कितने पतंग उड़ाते कितने सुईं पिरोते
हुक़्क़ों का दम लगाते हँस हँस के शाद होते
सौ सौ तरह का कर कर बिस्तार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

कुछ नाच की बहारें पानी के कुछ किनारे
दरिया में मच रहे हैं इन्दर के सौ अखाड़े
लबरेज़[4] गुलरुख़ों[5] से दोनों तरफ़ कगारे
बजरे व नाव चप्पू डोंगे बने निवाड़े

१ सर्व ईरान का एक सीधा और सुन्दर वृक्ष होता है २ पंक्ति
३ पगड़ी ४ भरे हुए ५ सुन्दर व्यक्तियां

इन जमघटों से होकर सरशार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

नावों में वह जो गुल-रू[१] नाचों में छक रहे हैं
जोड़े बदन में रंगीं, गहने भभक रहे हैं
तानें हवा में उड़तीं तबले खड़क रहे हैं
ऐशो-तरब[२] की धूमें, पानी छपक रहे हैं

सौ ठाठ के बनाकर अतवार[३] पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

हर आन बोलते हैं सय्यद कबीर की जै
फिर इसके बाद अपने उस्ताद पीर की जै
मोरो-मुकुट कन्हैया जमुना के तीर की जै
फिर ग़ोल के सब अपने ख़ुर्दो-कबीर[४] की जै

हर दम ये कर ख़ुशी को गुफ़्तार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

क्या क्या 'नज़ीर' यां के हैं पैरने के बानी[५]
है जिनके पैरने की मुल्कों में आन मानी
उस्ताद और ख़लीफ़ा शागिर्द यारे-जानी
सब ख़ुश रहें, है जब तक जमुना के बीच पानी

क्या क्या हंसी-ख़ुशी से हर बार पैरते हैं
इस आगरे में क्या क्या ऐ यार पैरते हैं

---

१ सुंदरियों २ रास-रंग ३ ढंग ४ छोटे-बड़े ५ आविष्कार

करता है कोई जौर जफा पेट के लिये।
सहता है कोई रंज बला पेट के लिये।
सीखा है कोई मक्र दग़ा पेट के लिये।
फिरता है कोई बेसरोपा पेट के लिये।
जो है सो हो रहा है फ़िदा पेट के लिये ॥१॥

आज़िज हैं ईसके वास्ते क्या शाह क्या वज़ीर।
मुहताज हैं इसी के लिये बख़्शी और अमीर।
मुन्शी वकील एलची मुतसद्दी और मुशीर।
चाकर नफ़र गुलाम तवंगर गनी फ़क़ीर।
सब कर रहे हैं फ़िक्र सदा पेट के लिये ॥२॥

नटखट उचक्के चोर दग़ाबाज़ राहमार।
ऐयार जेब-कतरे नज़र-बाज़ होशियार।
सब अपने-अपने पेट का करते हैं कारबार।
कोई खुदा के वास्ते करता नहीं शिकार।
बिल्ली भी मारती है छिपा पेट के लिये ॥३॥

फ़ाज़िल के फज़्ल में भी इसी की है इल्लजा।
आबिद नजूमी का भी इसी पर है मुद्दआ!
मुल्ला भी दिन गुज़ारे है लड़के पढ़ा-पढ़ा।
शायर भी देखिये तो क़सीदे बना बना।
क्या क्या करे है वस्फ़ो सना पेट के लिये ॥४॥

कहते हैं नानक शाह जिन्हें वह पूरे हैं आगाह[१] गुरू
वह कामिल[२] रहबर[३] जग में हैं यूं रौशन जैसे माह[४] गुरू
मक़सूद[५] मुराद उम्मीद सभी बर लाते हैं दिलख़्वाह गुरू
नित लुत्फ़ो-करम[६] से करते हैं हम लोगों का निर्वाह गुरू
इस बख़्शिश के इस अज़ामत[७] के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

हर आन दिलों विच यां अपने जो ध्यान गुरू का लाते हैं
और सेवक होकर उनके ही हर सूरत बीच कहाते हैं
गुरु अपनी लुत्फ़ो-इनायत से सुख-चैन उसे दिखलाते हैं
खुश रखते हैं हर हाल उन्हें सब उनके काज बनाते हैं
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

दिन-रात सभों ने यां दिल दे है यादे-गुरू से काम लिया
सब मन के मक़सद[८] भरपाये खुश-वक़्ती का हंगाम[९] लिया
दुख-दर्द में अपने ध्यान लगा जिस वक़्त गुरू का नाम लिया
पल बीच गुरू ने आन उन्हें खुशहाल किया और थाम लिया
इस बख़्शिश के इस अज़ामत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

---

१. ज्ञानी २. पूर्ण ३. पथ-प्रदर्शक ४. चन्द्रमा ५. अभिलाषा ६. कृपा ७. महानता ८. अभिलाषाएं ९. समय

यां जो-जो दिल की ख्वाहिश की कुछ बात गुरू से कहते हैं
वो अपने लुत्फ़ो-शफ़क़त[1] से नित हाथ उन्हों के गहते हैं
अल्ताफ़[2] से उनके ख़ुश होकर सब ख़ूबी से यह कहते हैं
दुख-दर्द उन्हों के हरते हैं सौ मुख से जग में रहते हैं

इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

जो हरदम उनसे ध्यान लगा उम्मीद करम[3] की धरते हैं
वो उन पर लुत्फ़ो-इनायत की हर आन तवज्जह करते हैं
असबाब खुशी और ख़ूबी के घर बीच उन्हों के भरते हैं
आनन्द इनायत करते हैं सब मन की चिन्ता हरते हैं

इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

जो लुत्फ़ो-इनायत उनमें है कब वस्फ़[4] किसी से उनका हो
वो लुत्फ़ो-करम जो करते हैं हर चार तरफ़ है ज़ाहिर वो
अल्ताफ़ जिन्हों पर है उनके सौ ख़ूबी हासिल हैं उनको
हर आन 'नज़ीर' अब यां तुम भी तो बाबा नानक शाह कहो

इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू
सब सीस झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

१. कृपा और स्नेह २. कृपाएं ३. दया ४. गुण (वर्णन)

है आबिदों[१] को ताअ़तो-तजरीद[२] की खुशी
और ज़ाहिदों[३] को ज़ुह्‌द[४] की तमहीद[५] की खुशी
रिन्द[६] आशिक़ों को है कई उम्मीद की खुशी
कुछ दिलबरों के वस्ल की कुछ दीद की खुशी
ऐसी न शब-बरात न बक़रीद की खुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की खुशी

पिछले पहर से उठके नहाने की धूम है
शीरो - शकर[७] सिवय्यां पकाने की धूम है
पीरो - जवां को नेअ़मतें खाने की धूम है
लड़कों को ईदगाह के जाने की धूम है
ऐसी न शब-बरात न बक़रीद की खुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की खुशी

कोई तो मस्त फिरता है जामे - शराब से
कोई पुकारता है कि छूटे अज़ाब[८] से
कल्ला किसी का फूला है लड्डू की चाब से
चटकारें जी में भरते हैं नानो - कबाब से
ऐसी न शब-बरात न बक़रीद की खुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की खुशी

---

१. भक्तों २. उपासना ३. कर्मकांडियों ४. धार्मिक कृत्य ५. पालन
६. शराबी ७. दूध-चीनी ८. मुसीबत

क्या ही मुआ़नक़े[1] की मची है उलट-पलट
मिलते हैं दौड़ - दौड़ के बाहम[2] झपट-झपट
फिरते हैं दिलबरों के भी गलियों में ग़ट[3] के ग़ट
आ़शिक़ मज़े उड़ाते हैं हरदम लिपट-लिपट

ऐसी न शब-वरात न बक़रीद की खुशी
जैसो हर ऐक दिल को है इस ईद की खुशी

काजल हिना ग़ज़ब मिसी-ओ-पान की घड़ी
पिशवाज़ें सुर्ख़ सौसनी, लाही की फुलझड़ी
कुरती कभी दिखा कभी अंगिया कसी कड़ी
कह "ईद-ईद" लूटें हैं दिल को घड़ी-घड़ी

ऐसी न शव-बरात न बक़रीद की खुशी
जैसी हर एक दिल को है इस ईद की खुशी

रोज़ों की सख्तियों में न होते अगर असीर[4]
तो ऐसी ईद की न खुशी होती दिल-पज़ीर[5]
सब शाद हैं गदा[6] से लगा शाह-ता-वज़ीर[7]
देखा जो हमने ख़ूब तो सच है मियां 'नज़ीर'

ऐसी न शब-बरात न बक़रीद की खुशी
जैसी हर एक दिल को है इस ईद की ख़ुशी

१. गले मिलना २. आपस में ३. झुंड ४. कैद ५. आनंदकारी ६. भिखारी ७. बादशाह से मन्त्री तक

जाड़ों में फिर ख़ुदा ने खिलवाये तिल के लड्डू
हर एक ख्वांचे में दिखलाये तिल के लड्डू
कूचे गली में हर जा[1] बिकवाये तिल के लड्डू
हमको भी दिल से हैंगे ख़ुश आये तिल के लड्डू
जीते रहे तो यारो फिर खाये तिल के लड्डू

उमदों[2] ने सौ तरह की याक़ूदियां[3] बनायीं
लौंगों में दारचीनी शक्कर भी ले मिलायीं
सर्दी में दौलतों की सौ गर्म चीज़ें खायीं
औरों ने डाल मिश्री सौ पैंडियाँ बनायीं
हमने भी गुड़ मंगाकर बंधवाये तिल के लड्डू

रख ख्वांचे पे रखकर पैकार[4] यूं पुकारा
बादाम-भूना चावो और कुरकुरा छुहारा
जाड़ा लगे तो इसका करता हूं में इजारा[5]
जिसका कलेजा यारो सर्दी ने होवे मारा
नौ दाम के वो मुझसे ले जाये तिल के लड्डू

जाड़ा तो अपने दिल में था पहलवां झुझाड़ा
पर एक दिल ने उसको रगरग से है उखाड़ा
जिस दम दिलो-जिगर को सर्दी ने आ लताड़ा
खम ठोंक यूं ही हमने जाड़े को धर पछाड़ा
तन फेर ऐसा भभका जब खाये तिल के लड्डू

---

१. जगह २. अमीरों ३. कतरियां, बर्फियाँ ४. फेरी वाला
५. जिम्मेदारी लेना

कल यार से जो अपने मिलने तईं गये हम
कुछ पेड़े उसकी ख़ातिर खाने को ले गये हम
महबूब[1] हंस के बोला, हैरत में हो रहे हम
"पेड़ों को देख दिल में ऐसे खुशी हुए हम
गोया हमारी ख़ातिर तुम लाये तिल के लड्डू"

जब उस सनम[2] के मुझको जाड़े का ध्यान आया
सब सौदा थोड़ा-थोड़ा बाज़ार से मंगाया
आगे जो लाके रक्खा कुछ उसको खुश न आया
चीज़ें तो वह बहुत थीं पर उसने कुछ न खाया
तब खुश हुआ वो, उसने जब पाये तिल के लड्डू

जाड़े में जिसको हरदम पेशाब है सताता
उठिए तो जाड़ा लिपटे, नहीं मूत निकलाजाता
उनकी दवा भी कोई पूछो हकीम से जा
बतलाये कितने नुसख़े पर एक बन न आया
आख़िर इलाज उसका ठहराये तिल के लड्डू

जाड़े में अब जो यारो यह तिल गये हैं भूने
महबूबों के भी तिल से उनके मज़े हैं दूने
दिल लेलिया हमारा तिल-शकरियों के रू[3] ने
यह भी 'नज़ीर' लड्डू ऐसे बनाये तूने
सुन सुन के जिनकी लज्ज़त घबराये तिल के लड्डू

● ● ●

---

१. प्रियतम २. प्रियतम ३. चेहरा

दुनिया की जो उल्फ़त का हुआ उसको सहारा
और उसने खुशी को मेरी ख़ातिर[1] में उतारा
देखो जो ये ग़फ़लत तो मेरा दिल ये पुकारा
आया था किसी शहर से इक हंस बेचारा
 इक पेड़ पे जंगल के हुआ उसका गुज़ारा

चंडूल, अगन, अबलक़े, छप्पां, बने, ढैयर
मैना व बये, किलकिले, बगले भी समन-बर[2]
तोते भी कई तौर के टुइय्याँ कोई लहबर
रहते थे बहुत जानवर उस पेड़ के ऊपर
 उसने भी किसी शाख़ पे घर अपना संवारा

बुलबुल ने किया उसकी मुहब्बत में खुश-आहंग[3]
और कोकिले कोयल ने भी उल्फ़त को लिया संग
खंजन में कलिंगों में थी चाहत की बजी चंग
देखा जो तयूरों[4] ने उसे हुस्न में खुश रंग
 वह हंस लगा सब की निगाहों में पियारा

सीमुर्ग़[5] भी सौ दिल से हुए मिलने के शायक़[6]
गढ़पंख भी पंखियों के हुए झलने के लायक़
सारस भी हवासिल[7] भी हुए उसके मुआफ़िक़
बाज़-ओ-लगड़-ओ-जर्रा-ओ-शारीं[8] हुए आशिक़
 शिकरों ने भी शक्कर से किया उसका मुदारा[9]

---

१. जी २. सफेद पर वाले ३. गाना ४. चिड़ियों ५. एक काल्पनिक बड़ा पक्षी . इच्छुक ७. एक पोहैदार पानी की चिड़िया ८. बाज ९. सत्कार।

कुछ सब्ज़क-ओ-बड़नक्के व कुछ टनटनो-बर्रे
पिडख़ी से लगा टोटर-ओ-कुमरो-ओ-हरपवे
ग़ौग़ाई, बगेरे व लट्टूरे व पपीहे
कुछ लाल, चिड़े, पोदने, पिद्दे हो न ग़श[1] थे
पडरी भी समझती थी उसे प्राँख का तारा

चाहत के गिरफ़्तार बटेरे, लवे तीतर
कब्कों[2] के तदर्वों[3] के भी चाहत में बँधे पर
हुदहुद भी हुए हित के बढ़य्या इधर-उधर
ज़ाग़ो-ज़ग़न[4]-ओ-तूती-ओ-ताऊस[5]-ओ-कबूतर
सब करने लगे उसकी मुहब्बत का इशारा

शक्ल उसकी वहीं आके खुपी शाम-चिड़ी के
दी चाह जता फिर वहीं झाँपू ने भी झप से
हरियल भी हुए उसके बड़े चाहने वाले
जितने गरज़ उस पेड़ पे रहते थे परिंदे[6]
उस हंस पे उन सब ने दिलो-जान को वारा

ख़्वाहिश से हुई उसकी कि हर दम उसे देखें
और उसकी मुहब्बत से ज़रा मुंह को न फेरें
दिन-रात उसे खुश रखें नित सुख उसे देवें
सोहबत जो हुई हंस की उन जानवरों में
यक चन्द रहा खूब मुहब्बत का गुज़ारा

---

१. आसक्त २. एक सुन्दर पक्षी ३. तीतर ४. कौवे-चील
५. मोर ६. पक्षी

सब होके खुश उसकी मए-उल्फ़त[1] लगे पीने
और पीत से हर इक ने वहाँ भर लिये सीने
हर आन जताने लगे चाहत के क़रीने[2]
उस हंस को जब हो गये दो-चार महीने
इक रोज़ वो यारों की तरफ़ देख पुकारा

याँ लुत्फ़ो-करम[3] तुमने किये हम पे है जो-जो
तुम सब की ये ख़ूबी है कहां हम से बयाँ हो
तक़सीर[4] कोई हम से हुई होवे तो बख़्शो
लो यारो हम अब जावेंगे कल अपने वतन को
अब तुमको मुबारक रहे यह पेड़ तुम्हारा

अब तक तो बहुत हम रहे फ़ुरसत से हम-आग़ोश[5]
अब यादे-वतन दिल की हमारे हुई हम-दोश[6]
जब हर्फ़ जुदाई का परिन्दों ने किया गोश[7]
इस बात के सुनते ही जो हर इक के उड़े होश
सब बोले, "ये फ़ुरक़त[8] तो नहीं हमको गवारा

बिन देखे तुम्हारे हमें कब चैन पड़ेंगे
इक आन न देखेंगे तो दिल ग़म से भरेंगे
गर तुमने ये ठहराई तो क्या सुख से रहेंगे ?
हम जितने हें सब साथ तुम्हारे ही चलेंगे
यह दर्द तो अब हम से न जावेगा सहारा

१. प्रेम-मदिरा २. ढंग ३. कृपाएँ ४. क़सूर ५. मिले-जुले ६. साथ ७. कान (सुनना) ८. विरह

फिर हंस ने यह बात कही उनसे कि "ऐ यार
कुछ बल नहीं अब चलने को साअ़त[1] से हैं नाचार"
आँखें हुईं अश्कों[2] से परिंदों की गुहर-बार[3]
इसमें जो शबे-कूच[4] को हुई सुब्ह नमूदार[5]
पर अपना हवा पर वहीं उस हंस ने मारा

वह हंस जब उस पेड़ से वां को चला नागाह[6]
मुंह फेर के ईधर से वतन की ज्युंही ली राह
देखा जो उसे जाते हुए वां से, तो कर आह
सब साथ चले उसके वो हमराह हवा-ख़्वाह[7]
हर एक ने उड़ने के लिए पंख पसारा

और हंस की उन सबको रिफ़ाक़त[8] हुई ग़ालिब
जब वां से चला वह तो हुई बेबसी ग़ालिब
कुल्फ़त[10] जो थी फ़ुरक़त की वो सब पर हुई ग़ालिब
दो कोस उड़े थे जो हुई मांदगी[11] ग़ालिब
फिर पर में किसी के न रहा क़ुव्वतो-यारा[12]

पर उनके हुए तर ज्युंही दूरी की पड़ी ओस
रोये कि रिफ़क़त की करें क्योंकि क़दमबोस[13]
थक-थक के लगे गिरने तो करने लगे अफ़सोस
कोई तीन, कोई चार, कोई पाँच उड़ा कोस
कोई आठ, कोई नौ, कोई दस कोस में हारा

---

१. घड़ी २. आँसू ३. मोती बरसाने वाली ४. कूच की रात
५. प्रकट ६. अचानक ७. प्रेमी ८. दोस्ती ९. जोर पर १०. दुख
११. थकावट १२. ताकत १३. पाँव चूमना

जब बन न सके उनसे रफ़ीक़ी[1] के जोबांकार
और इतने उड़े साथ कि कुछ होवे न इज़हार
जब देखी वो मुश्किल तो फिर आख़िर के तईं हार
कोई याँ रहा कोई वाँ रहा कोई हो गया नाचार
कोई और उड़ा आगे जो था सब में करारा

थी उसकी मुहब्बत की जो हर एक ने पी मैं
समझे थे वो दिल में बहुत उल्फ़त को बड़ी शै[2]
जब हो गये बेबस तो फिर आख़िर ये हुई रै[3]
चीलें रहीं कौवे गिरे और बाज़ भी थक गये
उस पहली ही मंज़िल में किया सबने किनारा

दुनिया की ये उल्फ़त है तो उसकी है कुछ राह
जब शक्ल ये होवे तो भला क्योंकि हो निर्वाह
नाचारी हो जिस जा[4] में तो वाँ कीजिए क्या चाह
सब रह गये जो साथ के साथी थे 'नज़ीर' आह
आख़िर के तईं हंस अकेला ही सिधारा

---

१. मित्रता २. चीज़ ३. राय ४. जगह

इलाही तू फ़य्याज़[1] है और करीम[2]
इलाही तू ग़फ़्फ़ार[3] है और रहीम[4]
मुक़द्दस[5], मुअ़ल्ला[6], मुनज़्ज़ा[7], अ़ज़ीम[8]
न तेरा शरीक और न तेरा सहीम[9]
तेरी ज़ाते-वाला है सबसे क़दीम

तेरे हुस्ने-कुदरत[10] ने या किर्दगार[11]!
किये है जहाँ में वो नक़्शो-निगार[12]
पहुँचती नहीं अ़क़्ल उन्हें ज़र्रा-वार[13]
तहय्युर[14] में हैं देखकर बार-बार
है जितने जहां में ज़हीनो-फ़हीम[15]

ज़मीं पर समावात[16] गर्दां[17] किये
नजूम[18] उनमें क्या-क्या दरख़्शां[19] किये
नबातात[20] बेहद नुमायां किये
अ़यां[21] बह्र[22] से दुर्रो-मरजां[23] किये
हजर[24] से जवाहर भी और ज़र्रो-सीम[25]

शिगुफ़्ता[26] किये गुल ब-फ़स्ले-बहार
अ़नादिल[27] भी और कुमरी-ओ-कब्कसार[28]

१. दानी २. कृपालु ३. क्षमाशील ४. दयालु ५. पवित्र ६. उच्च ७. पवित्र ८. उच्च ९. हिस्सेदार १०. निर्माण कौशल ११. विधाता १२. चित्र वैचित्र्य १३. तनिक भी १४. हैरानी १५. बुद्धिमान १६. आकाश १७. घुमबे वाले १८. सितारे १९. चमकने वाले २०. बनस्पतियाँ २१. प्रकट २२. समुद्र २३. मोती, मूंगा २४. पत्थर २५. सोना-चाँदी २६. प्रफुल्लित २७. बुलबुलें २८. फाख्ताएं और तीतर

बरो - बर्गो - नख़्लो - शजर[१] शाख़सार[२]
तरावत[३] से खुशबू से हंगाम - कार[४]
रवां की सबा[५] हर तरफ़ और नसीम[६]
बयां कब हो खिलक़त[७] की अनवाअ़[८] का
जो कुछ हस्त्र[९] होवे तो जावे कहा
खुसूसन बनी - आदमे - खुश - लक़ा[१०]
शरफ[११] उन सभो में इन्हीं को दिया
ये इस्लाम - ओ - ईमानो - दीने - क़दीम
अ़ता की इन्हें दौलते - माअ़रिफ़त[१२]
इबादत[१३] इताअ़त[१४] निको-मज़िलत[१५]
हया, हुस्नो - उल्फ़त, अदब, मस्लहत
तमीज़ो-सुख़न[१६] खल्क़[१७] खुश-मक्रमत[१८]
फ़रावां[१९] दिये और नाज़ो - नईम[२०]
तेरा शुक्र - अहसां हो किससे अदा
हमें मेह्र[२१] से तूने पैदा किया
किये और अल्ताफ़[२२] बे - इन्तहा
'नजीर' इस सिवा क्या कहे सर झुका
ये सब तेरे इकराम[२१] हैं, या करीम !

---

१. फल, पत्ते, पेड़, पौधे २. शाखाएं ३. नमी ४. भरी ५. सुबह की हवा ६. ठंडी हवा ७. सृष्टि ८. क़िस्मों ९. सीमा १०. सुन्दर मानव जाति ११. सम्मान १२. ईश-ज्ञान-रूपी धन १३. पूजा १४. आज्ञाकारिता १५. नेकी १६. बुद्धि और वाग्शक्ति १७. शिष्टाचार १८. दया-भाव १९. अत्यधिक २०. ऐश्वर्य २१ कृपा २२. कृपाएं २३ कृपाएं

ग़ज़लें

वो रश्के-चमन[1] कल जो ज़ेबे-चमन[2] था
चमन जुम्बिशे-शाख़[3] से सीना-ज़न[4] था
गया मैं जो उस बिन चमन में तो हर गुल
मुझे उस घड़ी अख़गरे-पैरहन[5] था
ये ग़ुंचा[6] जो बेदर्द गुलची[7] ने तोड़ा
खुदा जाने किसका ये नक़्शे-दहन[8] था

(क़ता)

तने-मुर्दा को क्या तकल्लुफ़ से रखना
गया वह तो जिससे मुज़य्यन[9] ये तन था
कई बार हमने ये देखा कि जिनका
मुशय्यन[10] बदन था मुअ़त्तल कफ़न था
जो क़ब्रे-कुहन[11] उनकी उखड़ी तो देखा
न अज़्वे-बदन[12] था न तारे-कफ़न था
'नज़ीर' आगे हमको हवस थी कफ़न की
जो सोचा तो नाहक़ का दीवानापन था

● ● ●

वो मुझको देख कुछ इस ढब से शर्मसार[13] हुआ
कि में हया ही पे उसकी फ़क़त निसार हुआ
सभों को बोसे दिये हंस के और हमें गाली
हज़ार शुक्र भला इस क़दर तो प्यार हुआ

---

१. बाग़ को लज्जित करने वाला (प्रयतम) २. बाग़ की शो
३. शाखाओं का हिलना ४. सीना पीटता हुआ ५. कपड़े में
चिंगारी ६. कली ७. फूल तोड़ने वाला ८. मुंह की तसवीर ९. शो
१०. शानदार ११. पुरानी कब्र १२. शरीर का अंग १३. शर्मिन्दा

क्या-क्या फ़रेब कहिए दुनियाँ की फ़ितरतों का।
मक्रो दग़ा व दुज़्दी है काम अकसरों का।।
सब दोस्त मिलके लूटें असबाब मुशफ़िक़ों का।
फिर किस जबां से शिकवा अब कीजै दुशमनों का।।
हुशियार यार जानी, यह दश्त है ठगों का।
यां टुक निगाह चूकी और माल दोस्तों का।।१।।

सैयाद चाहता है हो सैद का गुज़ारा।
और सैद चाहे दाना खाकर करे किनारा।।
काबू चढ़ा तो उसका दाना वो खा सिधारा।
और कुछ भी चाल चूका तो वूंही जाल मारा।
हुशियार यार जानी दश्त हैं ठगों का।।
याँ टुक निगाह चूकी और माल दोस्तों का।।२।।

हमारे मरने को हां तुम झूठ समझे थे
कहा रक़ीब ने, लो अब तो एतबार हुआ ?
क़रार करके न आया वो संग-दिल काफ़िर
पड़ें क़रार पे पत्थर, ये कुछ क़रार हुआ ?
गले का हार जो उस गुलबदन का टूट पड़ा
तो डर नज़र का वहीं उसको एक बार हुआ
किसी से और तो बस चला न उसका 'नज़ीर'
निदान मेरे ही आकर गले का हार हुआ

○ ○ ○

रुख़[1] परी, चश्म[2] परी जुल्फ़ परी, आन परी
क्यों न अब नामे - ख़ुदा हो तेरे क़ुरबान परी
झुमके झुमके वो सुरैया[3] के करनफूल, वो फूल
बुन्दे बाले परी, मोती परी और कान परी
मुस्कुराने की अदा जैसे चमक बिजली की
आन हँसने की क़यामत, लबो - दंदान[4] परी
आंख मस्ती की भरी, शोख़ निगाहें चंचल
क़हर काजल की खिचावट, मिसी-ओ-पान परी
क्या कहूँ उसके सरापा[5] की मैं तारीफ़ 'नज़ीर'
क़द परी, धज परी, आलम परी और शान परी

○ ○ ○

हँसे, रोये, फिरे रुसवा हुए, जाके बंधे छूटे
ग़रज़ हमने भी क्या-क्या कुछ मुहब्बत के मज़े लूटे

---

१. चेहरा २. आँख ३. एक तारा-समूह ४. होंठ और दांत
५. नखशिख

कलेजे में फफोले, दिल में दाग़ और गुल हैं हाथों पर
खिले है देखिए हम में भी यह उल्फ़त के गुल-बूटे

(किता)

ये कहते हैं कि आशिक़ छूट जाता है अज़ीयत[१] से
जब उसकी उम्र को लश्कर अजल[२] का आनकर लूटे
हमारी रूह तो फिरती है माशूक़ों की गलियों में
'नज़ीर' अब हम तो मर कर भी न इस जंजाल से छूटे

○ ○ ○

थे आगे बहुत जैसे कि ख़ुश यार हमीं से
ऐसे ही तुम अब रहते हो बेज़ार[३] हमीं से
महफ़िल में जो देखा तो इधर तुम हो खफ़ा, और
साक़ी को भी है हुज्जतो-तक़रार हमीं से
औरों से जो कहते हो कि हम उनसे हैं नाख़ुश
इसको तो फ़क़त करना है इज़हार हमीं से
समझेगा जो रुत्बे को 'नज़ीर' अहले-वफ़ा[४] के
तो मिलने लगेगा वो तरहदार[५] हमीं से

○ ○ ○

उसके शरारे-हुस्न[६] ने शोला जो इक दिखा दिया
तूर को सर से पांव तक फूंक दिया जला दिया
फिर के निगाह चार-सू[७] ठहरी उसी के रू-ब-रू[८]
उसने तो मेरी चश्म[९] को क़िब्ला, नुमा[१०] बना दिया
मैं हूँ पतंग- काग़ज़ी डोर है उसके हाथ में
चाहा इधर घटा दिया चाहा उधर बढ़ा दिया

---

१. कष्ट २. मौत ३. नाराज़ ४. प्रेमियों ५. सुन्दर (प्रियतम) ६. सौंदर्य की चिंगारी ७. चारों ओर ८. सामने ९. आंख १०. वह चिह्न जो काबे की दिशा दिखाने को बनाया जाता है।

तेशे[1] की क्या मजाल थी यह जो तराशे बे-सतूं[2]
था वो तमाम दिल का ज़ोर जिसने पहाड़ ढा दिया
सुनके ये मेरा अर्ज़े-हाल यार ने यूँ कहा 'नज़ीर'
"चल बे, ज़ियादा अब न बक तूने तो सर फिरा दिया"

○ ○ ○

गर्म याँ यूँ तो बड़ा हुस्न का बाज़ार रहा
मैं फ़क़त एक दुकां का ही खरीदार रहा
देखा मैं जब उसे फिर आईना-ए-चश्म[3] के बीच
ता-दमे-मर्ग[4] वही अक्स नमूदार[5] रहा
आ फंसा जो कोई इस दाम-गहे-हस्ती[6] में
था जो दाना[7] तो बहुत ज़ीस्त[8] से बेज़ार रहा
बस जो होता तो न रहता कभी दुनिया में 'नज़ीर'
था जो बेबस कोई दिन इसलिए लाचार रहा

○ ○ ○

ब-हस्बे-अक़्ल[9] तो कोई नहीं सामान मिलने का
मगर दुनिया से ले जावेंगे हम अरमान मिलने का
अजब मुश्किल है, क्या कहिए बग़ैर अज़ जान देने के
कोई नक़्शा नज़र आता नहीं आसान मिलने का

---

१. पत्थर काटने की कुदाल २. वह पहाड़ जिसे काटकर फ़रहाद शीरीं के लिए दूध की नहर लाया था ३. आँख रूपी दर्पण ४. मरने तक ५. स्पष्ट ६. जीवन का जाल ७. बुद्धिमान ८. ज़िन्दगी ९. बुद्धि के अनुसार

(क़िता)

'नज़ीर' इक उम्र हम उस दिलरुबा[1] के वस्ल की ख़ातिर
बहुत रोये, बहुत चीख़े, पे क्या इमकान[2] मिलने का ?
हमारी बेक़रारी इज़्तराबी[3] कुछ न काम आई
वो ख़ुद ही आ मिला जब वक़्त आया आन मिलने का

---

१. प्रियतम २. संभावना ३. बेचैनी

वो मुझको देख उस ढब से शरमसार हुआ।
कि मैं हया पर ही उसकी फ़क्त निसार हुआ॥
सभों को बोसे दिये हँस के, और हमें गाली;
हज़ार शुक्र ! भला इस क़द्र तो प्यार हुआ।
हमारे मरने को, हाँ, तुम तो झूठ समझे थे;
कहा रक़ीब ने, लो, अब तो एतबार हुआ।
क़रार करके न आया वो संगदिल काफ़िर;
पड़ें क़रार पे पत्थर, ये कुछ करार हुआ।
गले का हार जो उस गुलबदन का टूट पड़ा;
तो डर नज़र का वहीं उसको एकबार हुआ।
किसी से और तो कुछ बस चला न उसका 'नज़ीर';
निदान मेरे ही आकर गले का हार हुआ।

○ ○ ○

दिल दिया तो फिर एहदो पैमान कैसा।
लिया जिसने उसका है अहसान कैसा॥
जहाँ ज़ुल्फ़े काफ़िर में दिल फंस गया;
तो वाँ दीन कैसा ईमान कैसा।
अदा ने किया दिलको पहलू में बेकल;
करेगी सितम देखिये आन कैसा।
इधर काजल आँखों में क्या-क्या खिला है;
मिला मिस्सी से उधर पान कैसा।
'नज़ीर' उससे हमने छुपाया जो दिल को;
तो हँसकर कहा 'है ये इन्सान कैसा।'

○ ○ ○

जब उसके ही मिलने ने नाकाम आया।
तो या रब ये दिल मेरा किस काम आया॥
कभी उस तग़ाफ़ुल मनुष की तरफ़ से;
न क़ासिद न नामा न पैग़ाम आया।
सद अफ़सोस दम अपना निकला है किस दम;
कि जब घर से घर तक वो गुलफ़ाम आया।
किसी ने मिरी बात भी वां न पूछी;
अगर्चे हर इक ख़ास और आम आया।
ग़रज़ फिर उसी को जो याद आई मेरी;
तो घबराके जिस दम हुई शाम आया।
जिलाया उठाया गले से लगाया;
अज़ीज़ो फिर आख़िर वही काम आया।
गई बेवफ़ाई 'नज़ीर' अब जहाँ से;
वफ़ादारियों का भी हंगाम आया।

○ ○ ○

यूँ हम उस ज़ुल्फ़ में आये हैं दिले ज़ार को छोड़।
जैसे जाता है कोई रात में बीमार को छोड़॥
आई क्या-क्या नज़र उस दम गुलो सुंबल की बहार।
रुख पे जब उसने दिया काकले बलदार को छोड़।
आर की उसने तो फिर हमने कलाई पकड़ी॥
और न चुंगल से दिया दामने गुब्बार को छोड़।
जब 'नज़ीर' उसने कहा छोड़ तो यूँ बोले हम॥
दें कलाई को भी और भी दामने ज़रतार को छोड़।
पर ये है शर्त कि तू हाथ में ले तेग़ मियाँ।
या कोई हाथ इधर छोड़ दे या आर को छोड़॥

○ ○ ○

दूर से आये थे साक़ी सुनके मयख़ाने को हम।
बस तरसते ही चले, अफ़सोस! पैमाने को हम॥
मै भी है, मीना भी है, साग़र भी है, साक़ी नहीं;
दिल में आता है लगादें आग मैख़ाने को हम।
क्यों नहीं लेता हमारी तू ख़बर, ऐ बेख़बर;
क्यों तिरे आशिक़ हुए थे दर्दोग़म खाने को हम।
हमको फंसना था क़फ़स में, क्या गिला सय्याद का;
बस तरसते ही रहे हैं आब और दाने को हम।
ताक़ अबरू में सनम के क्या ख़ुदाई रह गई;
अब तो पूजेंगे उसी काफ़िर के बुतख़ाने को हम।
बाग़ में लगता नहीं, सहरा से घबराता है दिल;
अब कहाँ ले जाके बैठें ऐसे दीवाने को हम।
क्या हुई तक़सीर हम से, तो बतादे ऐ 'नज़ीर';
ताकि शादी मर्ग समझें ऐसे मर जाने को हम।

○ ○ ○

फिर बहार आई है और मौजे हवा लहराये है।
देखिये अपने जनूं को अब के क्या लहर आये है॥
उसकी चोटी का तसव्वुर दिल में यूँ लहराये है।
सांप के काटे को जैसे लहर पर लहर आये हैं॥
सुबह का करता है वादा वो तो फिर आता है कब;
दूसरे दिन का कहीं जब तीसरा पहर आये हैं।
गर वो रूठा है तो तू भी उसको कह भेज 'नज़ीर'
हम भी पा रखत नहीं नदी तू क्या गहराये है।

○ ○ ○

ताब उसके देखने की न लाये चले गये ।
क्या क्या परी जवान थे आये चले गये ।।
आदम रहा न कोई पयम्बर रहा यहाँ;
वो भी सरे ज़मी में समाए चले गये ।
दारा रहा न जम न सिकन्दर सा बादशाह;
तख़्ते जमीं पे सैकड़ों आये चले गये ।
आलम था ये ज़ुलेखा का युसुफ़ की चाह में;
रुक़्क़े हज़ार ब्याह के आये चले गये ।
देखा 'नज़ीर' मैंने चमन में जो आपको;
मेहन्दी भरे जो हाथ दिखाये चले गये ।।

○ ○ ○

हुए ख़ुश हम एक निगार से ।
हुए शाद उसकी बहार से ॥
कभी शान से कभी आन से ।
कभी नाज़ से कभी प्यार से ॥
हुई पैरहन से भी ख़ुश दिली ।
कली दिल की और बहुत खिली ॥
कभी तुर्रे से कभी गजरे से ।
कभी बद्धी से कभी हार से ॥
वो किनारी उनमें जो थी गुंधी ।
उसे देख कर भी हुई ख़ुशी ॥
कभी नूर से कभी लहर से ।
कभी ताब से कभी तार से ॥
गये उसके साथ चमन में हम ।
तो गुलों को देख के ख़ुश हुए ॥
कभी सरू से कभी नहर से ।
कभी बर्ग से कभी बार से ॥
वो 'नज़ीर' से तो मिला किया ।
मगर अपनी वज़ा में इस तरह ॥
कभी जल्द से कभी देर से ।
कभी लुत्फ़ से कभी आर से ॥

जिनकी की चाहत हमको,
दमबदम तक़रीर थी ॥
है जो नक़्श हुब उसी की,
रात दिन तहरीर थी ॥
किस खश से देखिये और,
मिलिये उससे किस तरह ॥
था यही अन्देश दिल में,
और यही तदबीर थी ॥
हमने देखा दूबदू और,
तुमने छेदा दिल को आह ॥
लायके ताज़ीर हम थे,
दिलकी क्या तकसीर थी ॥
यँ नज़र आया हमें,
कल एक जगह पर नज़ीर ॥
गरमे आवर उसकी,
हर दम आह की तासीर थी ॥
था ज़मी पर पाओं फैलाये,
पड़ा दीवानावार ॥
चश्म थी हैरत ज़दा,
और हाथ में तस्वीर थी ॥

ㅇ ㅇ ㅇ

हमदम चलें हम उसकी,
तरफ़ क्या निसार ले।
जावें मगर यही,
दिले उम्मीदवार ले।
हो बेक़रार क्योंकि न जावें,
हम उसके पास।
हमको तो हो क़रार पे,
जब दिल क़रार ले।
ऐ हसरते निसार,
उस अबरू के वार पर।
जो तुझको वारना है,
सो अब तू भी वार ले।
कूचे में उसके,
अश्के मुसलसल के हार गूँध।
जाता हूँ जब मैं,
हारों को बे इख़्तियार ले।
कहता हूँ गुलफरोशकी,
मानिन्द बार बार।
ताज़े हैं मोतिया के,
अगर कोई हार ले।
सौ सौ तरह के,
मकर बनाता हूँ इस लिये।
शायद वो ज़ुल में,
आन के मुझे पुकार ले।
दिल चीज़ क्या जो उसके,
तईं दीजे ऐ 'नज़ीर'।
हम नक़द जाँ भी देवें,
अगर वो उधार ले।

० ० ०

अदा-ओ-नाज़ में कुछ-कुछ
जो होश उसने सभाला है।
तो अपने हुस्न का क्या-क्या
दिलों में शोर डाला है॥
अभी क्या उम्र है, क्या अक़्ल है,
क्या फ़हम है लेकिन,
अभी से दिलफ़रेबी का हर,
इक़ नक़शा निराला है।
तबस्सुम क़हर, हँस देना,
क़यामत देखना आफ़त।
पलक देखो तो नश्तर है
निगह देखो तो भाला है॥
अभी नोके निगह में इस क़द्र
तेज़ी नहीं तिस पर।
कई ज़ख्मी किये हैं और
कई को मार डाला है॥
अकड़ना, तन के चलना,
धज बनाना, वज़ा दिखाना।
कभी नीमा कभी चिपकन,
कभी ख़ाली दोशाला है।
किसी के हाथ कांधे पर
किसी की लात सीने पर।
कहीं नफ़रत कहीं उल्फ़त
कहीं हीला हवाला है॥
'नज़ीर' ऐसा ही दिलबर
शोहरा-ए-आफ़ाक़ होता है।
अभी से देखिये फ़ितने ने
कैसा ढब निकाला है॥

० ० ०

क्या अदा क्या नाज़ है क्या आन है।
यां परी का हुस्न भी हैरान है॥
हूर भी देखे तो हो जावे फ़िदा,
आज उस आलम का वो इन्सान है।
जानो दिल हम नज्र को लाये हैं आज,
लीजिये ये दिल है और ये जान है।
दिल भी है दिल से तसद्दुक़ आप पर,
जान भी जी जान से क़ुर्बान है।
दिल कहां पहलू में जो हम दें तुम्हें,
ये तो घर इक उम्र से वीरान है।
अक्ल-ो-होश-ो-सब्र सब जाते रहे,
हां मगर इक अध मुई सी जान है।
वो भी गर लेनी हो तो ले जाइये,
ख़ैर ये भी आपका एहसान है।
आन कर मिल तो 'नज़ीर' अपने से जान,
अब वो कोई आन का मेहमान है।

○ ○ ○

की उस सनम ने जिस दम हम पर निगाह दिल से।
हमने भी उस निगह से की उसकी चाह दिल से।।
चाहत हमारी ऐ जां तुम ज़ाहिरी न समझो,
हम चाहते हैं तुमको ऐ रश्के माह दिल से।
जब देखते हैं उसकी तर्ज़े ख़राम यारो,
हम हर क़दम पे क्या क्या कहते हैं वाह दिल से।
बातें हमारे दिल की कहदें 'नज़ीर' उस से
है सच तो यूं कि दिल को होती है राह दिल से।

o o o

लीजिये ये दिल निहायत अच्छा है।
क्या बयां कीजिये इसमें क्या क्या है।
और को क्या ख़बर वही जाने,
हमने जिस ढब से उसको देखा है।
उल्फ़ते ग़ैर हम पे ठहरा कर,
रात दिन अब उसकी चर्चा है।
एक दिल था सो दे चुके तुमको,
हम पे ये अत्तहाम बेजा है।
मुंह दिखाते नज़ीर रुकते हैं,
ये भी कुछ और ही तमाशा है।

○ ○ ○

कल सुना हमने ये कहता था
वो इक हमराज़ से।
देखता था मुझको आज इक
शख्स अजब अंदाज़ से ।।
वो नियाज़ो अजज़ था उसकी
निगह से आशकार,
जिस तरह तायर किसी जा
थक रहे परवाज़ से।
तू जो वाकिफ़ हो तो जा
उसको बुला ला जल्द यां,
मैं तसल्ली दूं उसे
कुछ शर्म से कुछ नाज़ से।
मैं तो उसको जानता हूँ
नाम है उसका 'नज़ीर'।
और खबर है मुझको
उसकी चाह के आगाज़ से।
तुम हो सादे मेहरबां उसको
बखेड़े याद हैं,
और सिवा उसके मिरा
डरता है जी ग़म्माज़ से।
सुनके ये हमराज़ से
उसने कहा हँसकर मियां,
कुछ भी हो हम तो
मिलेंगे उस बखेड़े बाज़ से।

रखें न क्योंकि हम अपने
किनारे दिल की खुशी।
हमें तो चाहिये ऐ जां
तुम्हारे दिल की खुशी॥
हमारे दिल के न हाथ
आने से जो नाखुश थे,
लिया वो तुमने हुई
अब तोबा रे दिल की खुशी।
ये तुम जो देते हो
दशनाम और झिड़कते हो,
न सहते हम जो न होती
प्यारे दिल की खुशी।
न फंसते चश्म की ऐमा से
ज़ुल्फ़ में हरगिज़,
अगर न करती हमें कुछ
इशारे दिल की खुशी।
गिला न आने का सुनकर
कहा 'नज़ीर' उसने,
न आये हम तो न आये,
हमारे दिल की खुशी।

○ ○ ○

हम देखें किस दिन हुस्न ऐ दिल
उस रश्क परी का देखेंगे।
वो कद वो कमर वो चश्म वो लब
वो ज़ुल्फ़ वो मुखड़ा देखेंगे॥

मत देख बुतों की अबरू को
हट यां से तू ऐ दिल वर्ना तुझे,
एक आन में बिस्मिल कर देंगे
और आप तमाशा देखेंगे।
दिल देकर हमने आज उसे ही
देखी सूरत तेवरी की,
ये शक्ल रही तो ऐ हमदम
कल देखें क्या-क्या देखेंगे।
जब देखी उसकी चीं जबीं
यूं हमने 'नज़ीर' उस बुत से कहा,
ख़ैर आप तो हमसे नाख़ुश है
अब और को हम जा देखेंगे।
क्या लुत्फ़ रहा इस चाहत में
जो हम चाहें और तुम हो खफ़ा,
ये बात सुनी तो वो चञ्चल
यूं हँसकर बोला देखेंगे।

○ ○ ○

पैसे ही का अमीर के दिल में ख़्याल है।
पैसे ही का फ़क़ीर भी करता सवाल है॥
पैसा ही फ़ौज पैसा ही जाहो जलाल है।
पैसे ही का तमाम ये दंगो दवाल है॥
पैसा ही रंगो रूप है पैसा ही माल है।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है॥

पैसा न हो तो बाग़ कुएँ फिर कहाँ से हों।
खाने को पूरी और पुए फिर कहाँ से हों॥
ऐशोतरब की नक्की दुए फिर कहाँ से हों।
हलवा कचौरी माल पुए फिर कहाँ से हों॥
पैसा ही रंगो रूप है पैसा ही माल है।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है॥

जोड़े चमन बहार हैं पैसे के वास्ते।
गहने मुर्सा कार हैं पैसे के वास्ते॥
खुशबू के फूल हार हैं पैसे के वास्ते।
सब नक़्श और निगार हैं पैसे के वास्ते॥
पैसा ही रंगो रूप है पैसा ही माल है।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है॥

रौनक़ बहार होती है पैसे से सब हसूल।
और जो न होवे चेहरे पे उड़ती है ख़ाक़ धूल॥
पैसा ही सारी चीज़ है पैसा ही मर्द सूल।
पैसा से आदमी है जहाँ बीच नाक़बूल॥
पैसा ही रंगो रूप है पैसा ही माल है।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है।

o o o